CUET UG 2026 Hindi May 13 Shift 2 Question Paper with Solutions PDF

Question Paper with Solutions

Conducted by the National Testing Agency (NTA)

निर्धारित समय: 60 Minutes **अधिकतम अंक:** 250

सामान्य निर्देश

(i) यह CUET (UG) 2026 का हिंदी प्रश्न-पत्र है, जिसे राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (NTA) ने कंप्यूटर आधारित परीक्षा (CBT) मोड में आयोजित किया।

(ii) इस प्रश्न-पत्र में 50 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(iii) परीक्षा की अवधि 60 मिनट है। अधिकतम अंक 250 हैं।

(iv) प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्प हैं; प्रत्येक प्रश्न के लिए एक सही उत्तर चुनिए।

(v) अंकन योजना: सही उत्तर के लिए $+5$ अंक, गलत उत्तर के लिए -1 अंक और अनुत्तरित प्रश्न के लिए 0 अंक।

Hindi (250 अंक)

1. निम्नलिखित शब्दों में अशुद्ध वर्तनी वाला कौन सा शब्द है ? [5 अंक]

(A) अन्तर्धान

(B) उपलक्ष्य

(C) कृपया

(D) स्वास्थ

सही उत्तर: (D) स्वास्थ

हल:

अवधारणा:

- शुद्ध वर्तनी में शब्द के सभी आवश्यक वर्ण और मात्राएँ अपने निश्चित क्रम में होते हैं। केवल प्रचलित उच्चारण के आधार पर किसी वर्ण को छोड़ना उचित नहीं है।
- स्वस्थ होने की अवस्था का मानक संज्ञा रूप स्वास्थ्य है। इसमें अंत का संयुक्त व्यंजन थ्य बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रत्येक शब्द की वर्तनी जाँचिए अन्तर्धान का अर्थ ओझल हो जाना है और दिया गया रूप मान्य है। उपलक्ष्य का प्रयोग किसी अवसर अथवा निमित्त के संदर्भ में होता है; इसमें लक्ष्य वाला व्यंजन समूह सही है। कृपया विनम्र निवेदन का मानक शब्द है और इसकी ऋ की मात्रा भी सही है। इसलिए पहले तीन विकल्पों को केवल कठिन संयुक्ताक्षर होने के कारण अशुद्ध नहीं माना जा सकता।

चरण 2: अशुद्ध रूप और उसका सुधार पहचानिए चौथे विकल्प में स्वास्थ लिखा है। यहाँ स्वास्थ्य के अंत का य छूट गया है। स्वास्थ्य का अर्थ शारीरिक और मानसिक कुशलता या निरोगता है। उदाहरण के लिए, अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए नियमित व्यायाम आवश्यक है। इस वाक्य में स्वास्थ लिखना वर्तनी दोष होगा। अतः प्रश्न में माँगे गए अशुद्ध शब्द का चयन चौथे विकल्प से होता है।

चरण 3: निष्कर्ष अशुद्ध वर्तनी वाला शब्द स्वास्थ है; इसका शुद्ध रूप स्वास्थ्य है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: स्वस्थ और स्वास्थ्य में भेद रखें: पहला विशेषण है, जबकि अवस्था बताने वाली संज्ञा स्वास्थ्य में अंत का य अवश्य आता है।

---

2. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित पद की वर्तनी के चार विकल्प दिए गये हैं, सही विकल्प की पहचान कीजिये - सौम्यता ही नारी का सच्चा श्रृंगार है। [5 अंक]

(A) सृंगार

(B) श्रृंगार

(C) सिंगार

(D) शृंगार

सही उत्तर: (D) शृंगार

हल:

अवधारणा:

- संस्कृत मूल के तत्सम शब्द की मानक वर्तनी उसके मूल वर्णक्रम के आधार पर पहचानी जाती है। बोलचाल का रूप और परीक्षा में अपेक्षित शुद्ध तत्सम रूप अलग हो सकते हैं।
- शृंगार में श के साथ ऋ की मात्रा आती है। आरंभ में श् और र का संयुक्त रूप बनाकर उसके साथ ऋ लगाना इस शब्द की मानक वर्तनी नहीं है।

चरण 1: वाक्य में अपेक्षित शब्द पहचानिए वाक्य का आशय है कि नारी का वास्तविक आभूषण उसकी सौम्यता है। यहाँ सजावट अथवा सौंदर्य बढ़ाने वाला भाव व्यक्त करने वाला शब्द चाहिए। दिए गए विकल्पों में अर्थ लगभग पहचान में आ जाता है, किंतु प्रश्न विशेष रूप

से वर्तनी की शुद्धता पूछता है। इसलिए केवल उच्चारण या परिचित लिखावट के आधार पर चुनाव नहीं करना चाहिए।

चरण 2: चारों रूपों का वर्णक्रम मिलाइए सृंगार में आरंभिक स है, जबकि मानक तत्सम रूप श से शुरू होता है। श्रृंगार में श के बाद अनावश्यक र का संयुक्त रूप जुड़ गया है। सिंगार बोलचाल और लोकप्रयोग में मिलने वाला रूप है, लेकिन यहाँ शुद्ध तत्सम वर्तनी अपेक्षित है। श्रृंगार में श्रृ का सही आरंभ और आगे ंगार का अपेक्षित क्रम है। अतः चौथा विकल्प वाक्य में रेखांकित शब्द के स्थान पर उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य में शुद्ध वर्तनी श्रृंगार होगी: सौम्यता ही नारी का सच्चा श्रृंगार है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: श्रृंगार लिखते समय आरंभ के श्रृ को अलग पहचानें; ऋ की मात्रा के पहले अतिरिक्त र का संयुक्ताक्षर न जोड़ें।

---

3. उद्गम की दृष्टि से निम्नलिखित शब्दों को तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज के क्रम में व्यवस्थित कीजिये -

A. गाँव

B. क्षेत्र

C. गाड़ी

D. दुकान [5 अंक]

(A) (A), (B), (C), (D)

(B) (A), (C), (B), (D)

(C) (B), (A), (C), (D)

(D) (C), (B), (D), (A)

सही उत्तर: (C) (B), (A), (C), (D)

हल:

अवधारणा:

- उद्गम के आधार पर शब्दों को तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज वर्गों में रखा जाता है। संस्कृत से बिना रूप बदले आए शब्द तत्सम और रूप बदलकर आए शब्द तद्भव कहलाते हैं।
- देशज शब्द स्थानीय बोलचाल से जुड़े होते हैं, जबकि विदेशज शब्द दूसरी भाषाओं से हिंदी में आए होते हैं। इस प्रश्न में इन चार वर्गों का क्रम भी बनाए रखना है।

चरण 1: तत्सम और तद्भव शब्द पहचानिए 'क्षेत्र' संस्कृत का शब्द है और हिंदी में अपने उसी रूप में प्रयुक्त होता है; इसलिए यह तत्सम है। सूची में इसका संकेत (B) है। 'गाँव' संस्कृत के 'ग्राम' से रूप बदलकर बना है; इसलिए यह तद्भव है और इसका संकेत (A) है। अतः क्रम के पहले दो स्थान (B), (A) होंगे। इससे वे विकल्प हट जाते हैं जो 'गाँव' या 'गाड़ी' से शुरू होते हैं।

चरण 2: देशज और विदेशज जोड़कर विकल्प चुनिए दिए गए वर्गीकरण में 'गाड़ी' देशज शब्द है, इसलिए तीसरे स्थान पर उसका संकेत (C) आएगा। 'दुकान' फ़ारसी से हिंदी में आया शब्द है; इसलिए यह विदेशज है और अंतिम स्थान पर उसका संकेत (D) आएगा। पूरा क्रम 'क्षेत्र, गाँव, गाड़ी, दुकान', अर्थात् (B), (A), (C), (D) बनता है। विकल्प (A) में गाँव को तत्सम और क्षेत्र को तद्भव के स्थान पर रखा गया है; विकल्प (B) भी गाँव से शुरू होकर क्षेत्र को तीसरे स्थान पर रखता है। विकल्प (D) में गाड़ी पहले और दुकान तीसरे स्थान पर है। इसलिए ये तीनों निर्धारित वर्गक्रम से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज का सही क्रम 'क्षेत्र, गाँव, गाड़ी, दुकान' है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले संस्कृत के अपरिवर्तित 'क्षेत्र' और परिवर्तित 'गाँव' को पहचानकर (B), (A) तय करें; फिर शेष दोनों वर्गों का क्रम जाँचें।

---

4. निम्नलिखित शब्दों में कौन सा शब्द देशज है? [5 अंक]

(A) गेहूँ

(B) लोक

(C) बेटा

(D) दोस्त

सही उत्तर: (C) बेटा

हल:

अवधारणा:

- उद्गम की दृष्टि से तत्सम शब्द संस्कृत से बिना प्रमुख परिवर्तन के आते हैं, जबकि तद्भव शब्द परिवर्तित रूप में विकसित होते हैं। देशज शब्द स्थानीय बोलियों और जनभाषा की परंपरा से जुड़े होते हैं।
- विदेशी भाषाओं से हिंदी में आए शब्द विदेशज कहलाते हैं। किसी शब्द का रोजमर्रा में बहुत प्रचलित होना उसे स्वतः देशज नहीं बनाता।

चरण 1: स्पष्ट तत्सम और विदेशज शब्द अलग कीजिए लोक संस्कृत का शब्द है और हिंदी में अपने तत्सम रूप में प्रयुक्त होता है। इसलिए इसे देशज नहीं चुनेंगे। दोस्त फ़ारसी मूल का शब्द है; हिंदी में सामान्य प्रयोग होने पर भी उद्गम की दृष्टि से यह विदेशज है। इन दोनों विकल्पों का वर्गीकरण स्पष्ट होने से अब गेहूँ और बेटा के बीच निर्णय करना है।

चरण 2: शेष शब्दों में देशज रूप पहचानिए गेहूँ का संबंध संस्कृत गोधूम से विकसित तद्भव शब्दपरंपरा से है। ध्वनि और रूप बदलने पर बना शब्द तद्भव माना जाता है, देशज नहीं। दिए गए विकल्पों में बेटा स्थानीय लोकभाषा से जुड़ा देशज शब्द माना जाता है। इसलिए प्रश्न में माँगा गया देशज शब्द तीसरे विकल्प में है। इस प्रकार गेहूँ तद्भव, लोक तत्सम और दोस्त विदेशज होने के कारण चयन से बाहर हो जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दिए गए शब्दों में देशज शब्द बेटा है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: देशज पहचानते समय पहले संस्कृत के स्पष्ट तत्सम, संस्कृत से बदले तद्भव और परिचित विदेशी मूल के शब्दों को अलग कर दें।

---

5. निम्नलिखित विकल्पों में तत्सम शब्द की पहचान कीजिए - [5 अंक]

(A) कपूर

(B) आम

(C) घृणा

(D) कान

सही उत्तर: (C) घृणा

हल:

अवधारणा:

- संस्कृत से बिना रूप-परिवर्तन के हिंदी में आए शब्द तत्सम कहलाते हैं। पहचान में केवल शब्द का अर्थ नहीं, उसका मूल रूप भी देखना चाहिए।
- संस्कृत शब्द का उच्चारण और रूप बदलकर बना हिंदी शब्द तद्भव होता है। एक ही अर्थ वाले तत्सम और तद्भव रूप अलग-अलग हो सकते हैं।

चरण 1: अपरिवर्तित संस्कृत रूप पहचानें 'घृणा' संस्कृत से हिंदी में अपने मूल रूप में आया है। इसमें मूल वर्ण-रचना बनी हुई है। इसलिए यह तत्सम शब्द है और विकल्प (C) प्रश्न की शर्त पूरी करता है।

चरण 2: अन्य शब्दों के मूल रूप जाँचें 'कपूर' का तत्सम रूप 'कर्पूर', 'आम' का 'आम्र' और 'कान' का 'कर्ण' है। दिए गए तीनों हिंदी रूपों में अपने संस्कृत मूल की अपेक्षा परिवर्तन हुआ है, इसलिए ये तद्भव हैं। अतः संस्कृत मूल वाला कोई भी प्रचलित शब्द अपने-आप तत्सम

नहीं हो जाता; उसके वर्तमान रूप का मूल से मिलना आवश्यक है। इस प्रकार (A), (B) और (D) को हटाने पर भी 'घृणा' ही बचता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'घृणा' तत्सम शब्द है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कपूर-कर्पूर, आम-आम्र और कान-कर्ण जैसी जोड़ियाँ याद रखें; बदला हुआ हिंदी रूप तद्भव और मूल संस्कृत रूप तत्सम होता है।

---

6. निम्नलिखित में कौन सा कोयल का पर्यायवाची नहीं है? [5 अंक]

(A) काकली

(B) रासभ

(C) वनप्रिया

(D) पिक

सही उत्तर: (B) रासभ

हल:

अवधारणा:

- पर्यायवाची शब्द एक ही वस्तु या प्राणी के समान अर्थ वाले नाम होते हैं। प्रश्न में 'नहीं' आया है, इसलिए समूह से अलग अर्थ वाला शब्द चुनना है।
- किसी पक्षी की विशेषता से जुड़े काव्यात्मक नाम और उसके सामान्य नाम पर्याय-समूह में आ सकते हैं; केवल शब्द की ध्वनि से अर्थ तय नहीं होता।

चरण 1: कोयल के नामों का समूह बनाएँ 'पिक' कोयल का प्रसिद्ध नाम है। 'वनप्रिया' और 'काकली' भी दिए गए पर्याय-समूह में कोयल से संबद्ध नाम हैं। इसलिए (A), (C) और (D) प्रश्न के नकारात्मक निर्देश के उत्तर नहीं हैं। यहाँ कोयल का कोई दूसरा नाम नहीं, उसका पर्याय न होने वाला शब्द पूछा गया है।

चरण 2: भिन्न प्राणी का नाम पहचानें 'रासभ' का अर्थ गधा है। गधा और कोयल अलग-अलग प्राणी हैं, इसलिए रासभ को कोयल का पर्याय नहीं कहा जा सकता। विकल्प (B) अर्थ की दृष्टि से शेष तीन विकल्पों से अलग है। सही निर्णय के लिए पहले प्रत्येक शब्द का अर्थ जाँचकर फिर 'नहीं' की शर्त लागू करनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष 'रासभ' गधे का नाम है, कोयल का पर्यायवाची नहीं है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: रासभ-गधा और पिक-कोयल की अर्थ-जोड़ियाँ याद रखें; 'पर्यायवाची नहीं' में दूसरे प्राणी का नाम खोजें।

---

7. निम्नलिखित में 'अश्व' शब्द का पर्यायवाची नहीं है - [5 अंक]

(A) तुरंग

(B) कुंजर

(C) हय

(D) बाजि

सही उत्तर: (B) कुंजर

हल:

अवधारणा:

- पर्यायवाची शब्द एक ही अर्थ या प्राणी का बोध कराते हैं। 'अश्व' का सामान्य हिंदी अर्थ घोड़ा है; विकल्पों को इसी अर्थ से मिलाना है।
- प्रश्न में 'पर्यायवाची नहीं' पूछा गया है। इसलिए घोड़े के किसी अन्य नाम के बजाय उस शब्द को चुनना है जो किसी भिन्न प्राणी को

दर्शाता है।

चरण 1: अश्व के पर्याय पहचानें 'तुरंग' और 'हय' दोनों घोड़े के नाम हैं। विकल्प (D) में दिया 'बाजि' भी घोड़े के अर्थ वाले वाजि या वाजी शब्द का प्रचलित रूप है। इस प्रकार (A), (C) और (D) अश्व के अर्थ-समूह में आते हैं। इनमें से किसी को चुनना प्रश्न के 'नहीं' शब्द की उपेक्षा करना होगा।

चरण 2: अलग अर्थ वाले शब्द को चुनें 'कुंजर' का अर्थ हाथी है, घोड़ा नहीं। हाथी के अन्य नाम गज और हस्ती हैं। इस अर्थ-भेद के कारण कुंजर को अश्व का पर्याय नहीं मान सकते। सभी विकल्पों की तुलना में केवल (B) दूसरा प्राणी बताता है, इसलिए वही अपेक्षित अपवाद है। पशु का अर्थ बदल जाने पर केवल समान साहित्यिक प्रयोग से पर्याय-संबंध नहीं बनता।

चरण 3: निष्कर्ष 'कुंजर' हाथी का नाम है और 'अश्व' का पर्यायवाची नहीं है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: अश्व-हय-तुरंग को घोड़े के समूह में और गज-कुंजर-हस्ती को हाथी के समूह में रखकर याद करें।

8. निम्नलिखित में 'अनुशासन' का उचित विलोम शब्द है - [5 अंक]

(A) अनुशासनहीन

(B) अननुशासन

(C) दुष्ट

(D) मनमौजी

सही उत्तर: (B) अननुशासन

हल:

अवधारणा:

- विलोम शब्द विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं। सही विलोम चुनते समय अर्थ के साथ शब्द का व्याकरणिक रूप भी समान स्तर पर होना चाहिए।
- 'अनुशासन' संज्ञा है, जिसका अर्थ नियमों और व्यवस्था का पालन है। इसका विलोम उस स्थिति का नाम होगा जिसमें अनुशासन का अभाव हो।

चरण 1: संज्ञा के विपरीत संज्ञा चुनें 'अननुशासन' अनुशासन के अभाव या नियमहीनता की स्थिति बताता है। यह 'अनुशासन' की तरह भाव या स्थिति का नाम है और उसके विपरीत अर्थ को सीधे व्यक्त करता है। इसलिए विकल्प (B) अर्थ तथा व्याकरणिक रूप दोनों दृष्टियों से उचित है। केवल किसी व्यक्ति का बुरा स्वभाव बताना इस भाववाचक संज्ञा का सटीक विलोम नहीं है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का अंतर समझें 'अनुशासनहीन' विशेषण है, जो नियम न मानने वाले व्यक्ति या आचरण की विशेषता बताता है। यह संबंधित विपरीत विशेषता है, किंतु पूछी गई संज्ञा का समान रूप वाला विलोम नहीं। 'दुष्ट' बुरे स्वभाव को और 'मनमौजी' अपनी इच्छा से चलने वाले स्वभाव को व्यक्त करता है; दोनों अनुशासन के अभाव की स्थिति के सीधे नाम नहीं हैं। इसलिए (A), (C) और (D) अपेक्षित उत्तर नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'अनुशासन' का उचित विलोम 'अननुशासन' है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: विलोम में संज्ञा के लिए संज्ञा और विशेषण के लिए विशेषण खोजें; अनुशासन की स्थिति और अनुशासनहीन व्यक्ति में अंतर रखें।

9. निम्नलिखित में 'क्षणिक' का उचित विलोम शब्द है - [5 अंक]

(A) शाश्वत

(B) वर्तमान

(C) क्षणभंगुर

(D) समसामयिक

सही उत्तर: (A) शाश्वत

हल:

अवधारणा:

- विलोम शब्द ऐसे शब्द होते हैं जिनके अर्थ परस्पर विपरीत हों। केवल अलग अर्थ होना पर्याप्त नहीं है; अर्थ के प्रमुख गुण का उलट होना आवश्यक है।
- क्षणिक का अर्थ थोड़े समय तक रहने वाला अथवा क्षण भर में समाप्त हो जाने वाला है। इसके विपरीत शाश्वत का अर्थ सदा रहने वाला है।

चरण 1: मूल शब्द का अर्थ पहचानिए क्षणिक शब्द अवधि की अल्पता बताता है। क्षणिक सुख या क्षणिक प्रभाव कहने पर आशय होता है कि वह स्थायी नहीं है। इसलिए इसका विलोम खोजते समय हमें ऐसी अवस्था चाहिए जिसका अस्तित्व क्षण भर तक सीमित न हो, बल्कि जो निरंतर बनी रहे। यह तुलना समय की अवधि और स्थायित्व के आधार पर की जाती है।

चरण 2: विकल्पों की अर्थ के आधार पर तुलना कीजिए शाश्वत का अर्थ नित्य, सदा रहने वाला अथवा चिरस्थायी है। अतः यह क्षणिक के अस्थायित्व का सीधा विपरीत है। वर्तमान का अर्थ इस समय विद्यमान है; कोई वर्तमान वस्तु क्षणिक भी हो सकती है। क्षणभंगुर का अर्थ शीघ्र नष्ट होने वाला है, इसलिए वह क्षणिक का समानार्थी है। समसामयिक का अर्थ समान समय से संबंधित है; यह स्थायित्व का विलोम संबंध व्यक्त नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष क्षणिक का उचित विलोम शाश्वत है। इसलिए सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: विलोम चुनते समय पहले अर्थ की धुरी पहचानें: क्षणिक में धुरी अल्प अवधि है, इसलिए उसके सामने सदा रहने वाला शाश्वत रखें।

10. निम्नलिखित शब्दों में 'आँख' का अर्थ नहीं होता है - [5 अंक]

(A) संतान

(B) छिद्र

(C) स्वरूप

(D) परख

सही उत्तर: (C) स्वरूप

हल:

अवधारणा:

- अनेकार्थी शब्द के एक से अधिक स्वीकृत अर्थ होते हैं। प्रश्न में पूछा गया अर्थ नहीं होता है, इसलिए उन अर्थों में न आने वाले विकल्प को चुनना है।
- आँख का अर्थ नेत्र के अतिरिक्त छिद्र, पहचान या परख और लाक्षणिक प्रयोग में प्रिय संतान भी होता है।

चरण 1: प्रश्न के निषेध को पहचानिए यहाँ आँख का साधारण अर्थ नेत्र बताना उद्देश्य नहीं है। दिए गए चार शब्दों में यह पहचानना है कि कौन सा शब्द उसके प्रचलित अथवा लाक्षणिक अर्थसमूह में नहीं आता। इसलिए किसी विकल्प को केवल इसलिए नहीं हटाएँ कि वह शरीर के अंग का नाम नहीं है; अनेकार्थी शब्दों में प्रयोग के अनुसार अलग अर्थ मिलते हैं।

चरण 2: प्रत्येक विकल्प का संबंध जाँचिए संतान, विशेषकर अत्यंत प्रिय संतान, आँख का लाक्षणिक अर्थ है; इसी भाव में संतान को

आँखों का तारा कहा जाता है। छिद्र का संबंध सुई की आँख जैसे प्रयोग से स्पष्ट है। परख का अर्थ पहचानने या गुण-दोष देखने की क्षमता है, जैसे किसी वस्तु को पहचानने की आँख होना। स्वरूप का अर्थ रूप, आकृति या वास्तविक प्रकृति है; वह आँख का स्वीकृत अर्थ नहीं है। इसलिए पहले, दूसरे और चौथे विकल्प के विपरीत तीसरा विकल्प प्रश्न के निषेध को पूरा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष आँख का अर्थ स्वरूप नहीं होता है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अनेकार्थी शब्द के प्रश्न में नहीं शब्द को रेखांकित करें और प्रत्येक विकल्प का कोई स्वीकृत प्रयोग सोचकर असंगत अर्थ अलग करें।

11. निम्नलिखित विकल्पों में 'हरि' शब्द का अर्थ नहीं है - [5 अंक]

(A) मेढ़क

(B) हाथी

(C) नेवला

(D) तोता

सही उत्तर: (C) नेवला

हल:

अवधारणा:

- हरि संस्कृत और हिंदी का अनेकार्थी शब्द है। इसका प्रयोग देवता के नाम के साथ अनेक जीवों और अन्य अर्थों में भी मिलता है।
- अनेकार्थी शब्द के अर्थ की पहचान शब्द के स्वीकृत अर्थसमूह से की जाती है; केवल परिचित धार्मिक अर्थ तक सीमित रहना ठीक नहीं है।

चरण 1: हरि के अर्थों का विस्तार समझिए सामान्य प्रयोग में हरि सुनकर विष्णु या ईश्वर का स्मरण होता है, परंतु इस प्रश्न में सभी विकल्प जीवों के नाम हैं। इससे स्पष्ट है कि यहाँ धार्मिक अर्थ नहीं, हरि के पारंपरिक अनेकार्थ पूछे गए हैं। एक ही शब्द का अलग संदर्भों में अलग अर्थ होना अनेकार्थकता कहलाता है। किसी जीव का नाम अपरिचित लगने मात्र से उसे गलत नहीं माना जा सकता।

चरण 2: दिए गए जीवों की तुलना कीजिए मेढ़क, हाथी और तोता हरि के स्वीकृत अनेकार्थों में आते हैं। इसलिए विकल्प (A), (B) और (D) को उत्तर नहीं चुनेंगे, क्योंकि प्रश्न उस अर्थ की पहचान चाहता है जो नहीं होता। नेवला इस अर्थसमूह में सम्मिलित नहीं है। उसके लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द नेवला है और संस्कृत नाम नकुल है। अतः बाकी तीन विकल्पों से अलग नेवला ही निषेध वाले प्रश्न का उपयुक्त उत्तर बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष हरि शब्द का अर्थ नेवला नहीं है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: हरि जैसे अनेकार्थी शब्द में केवल विष्णु वाला परिचित अर्थ न देखें; दिए गए प्रत्येक जीव का परंपरागत शब्दार्थ से मिलान करें।

12. सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए :

सूची -I वाक्यांश	सूची -II एक शब्द
(A). जिसके समान अन्य न हो	(I). असामयिक
(B). जो नहीं जानता हो	(II). अज्ञ
(C). जिसके समान दूसरा न हो	(III). अनन्य
(D). जो उचित समय पर न हो	(IV). अद्वितीय

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए : [5 अंक]

(A) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (III), (D) - (IV)

(B) (A) - (III), (B) - (II), (C) - (IV), (D) - (I)

(C) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (IV), (D) - (III)

(D) (A) - (III), (B) - (IV), (C) - (I), (D) - (II)

सही उत्तर: (B) (A) - (III), (B) - (II), (C) - (IV), (D) - (I)

हल:

अवधारणा:

- वाक्यांश के लिए एक शब्द चुनते समय उसके पूरे अर्थ को देखना चाहिए। समान अर्थ वाले निकटवर्ती शब्दों में सूक्ष्म भेद होते हैं, इसलिए हर जोड़ी को अलग जाँचना आवश्यक है।
- अनन्य और अद्वितीय दोनों अनुपम होने का भाव देते हैं; अज्ञ का अर्थ न जानने वाला और असामयिक का अर्थ उचित समय पर न होने वाला है। सूची के सभी शब्दों का एक-एक बार उपयोग करना है।

चरण 1: दो निश्चित अर्थों का मिलान कीजिए जो नहीं जानता हो, उसके लिए अज्ञ शब्द है। इसलिए सूची के दूसरे वाक्यांश का मेल दूसरी सूची के अज्ञ से होगा। जो उचित समय पर न हो, उसके लिए असामयिक शब्द है। अतः अंतिम वाक्यांश असामयिक से जुड़ेगा। असामयिक में समय की अनुपयुक्तता का भाव है, जबकि अज्ञ में ज्ञान का अभाव है; दोनों को एक-दूसरे के स्थान पर नहीं रख सकते। इन दो निश्चित अर्थों से अधिकांश गलत विकल्प तुरंत हट जाते हैं।

चरण 2: अनन्य और अद्वितीय को शेष वाक्यांशों से जोड़िए जिसके समान अन्य न हो, वह अनन्य है। जिसके समान दूसरा न हो, वह अद्वितीय है। यहाँ अनन्य में अन्य के न होने और अद्वितीय में द्वितीय के न होने का भाव देखकर सूची के शब्दों को पहचानना सरल है। इसलिए पूरा सुमेलन (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I) बनता है। यह दूसरे विकल्प में है। पहला विकल्प पहले वाक्यांश को असामयिक से जोड़ता है; तीसरा भी यही त्रुटि करता है। चौथे में अज्ञ के स्थान पर अद्वितीय तथा अन्य स्थानों पर गलत अर्थ दिए गए हैं। इसलिए केवल दूसरा विकल्प चारों संबंधों की एक साथ पुष्टि करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन अनन्य, अज्ञ, अद्वितीय और असामयिक है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले अज्ञ को ज्ञान के अभाव और असामयिक को अनुचित समय से जोड़ें; फिर अनन्य में अन्य और अद्वितीय में द्वितीय का संकेत पहचानें।

13. जिसकी बुद्धि तुरंत सोच ले, उसे क्या कहते हैं?

A. द्रुतगामी

B. कुशाग्रबुद्धि

C. प्रत्युत्पन्नमति

D. दत्तचित्त

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें : [5 अंक]

(A) केवल (A), (B) और (D)

(B) केवल (A) और (C)

(C) केवल (D)

(D) केवल (C)

सही उत्तर: (D) केवल (C)

हल:

अवधारणा:

- वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द चुनते समय उसके पूरे अर्थ को देखना चाहिए। केवल बुद्धिमत्ता या एकाग्रता का उल्लेख तत्काल उत्तर देने की क्षमता के समान नहीं होता।
- प्रत्युत्पन्नमति उस व्यक्ति को कहते हैं जिसकी बुद्धि अवसर पड़ने पर तुरंत उचित बात सोच लेती है। इसमें त्वरित समझ और समयानुकूल निर्णय दोनों समाहित हैं।

चरण 1: मुख्य संकेत पहचानिए प्रश्न में निर्णायक शब्द हैं "बुद्धि तुरंत सोच ले। इसलिए ऐसा शब्द चाहिए जो किसी नई परिस्थिति में तुरंत विचार कर सकने की क्षमता बताए। कथन (C) का प्रत्युत्पन्नमति इसी अर्थ का सटीक शब्द है। कुशाग्रबुद्धि का अर्थ तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है; उससे तत्काल सूझने का विशिष्ट अर्थ अपने आप व्यक्त नहीं होता।

चरण 2: शेष शब्दों और उत्तर-संयोजनों को जाँचिए द्रुतगामी तेज गति से चलने वाला होता है, इसलिए (A) बुद्धि की इस विशेषता का नाम नहीं है। दत्तचित्त का अर्थ किसी काम में ध्यान लगाए हुए या एकाग्रचित्त है, इसलिए (D) भी उचित नहीं है। इस प्रकार केवल कथन (C) स्वीकार्य है। उत्तर-विकल्प (A) में तीन असंगत शब्द हैं, (B) में द्रुतगामी जुड़ा है और (C) में केवल दत्तचित्त है। केवल अंतिम विकल्प अपेक्षित शब्द देता है।

चरण 3: निष्कर्ष जिसकी बुद्धि तुरंत सोच ले, उसे प्रत्युत्पन्नमति कहते हैं। अतः सही उत्तर विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: तुरंत सूझने के लिए प्रत्युत्पन्नमति, तीखी समझ के लिए कुशाग्रबुद्धि और ध्यान लगे होने के लिए दत्तचित्त का भेद याद रखें।

14. निम्नलिखित में पुंलिंग शब्दों की पहचान कीजिए -

A. सिन्धु

B. दही

C. पानी

D. सहायता

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें : [5 अंक]

(A) केवल (A) और (D)

(B) केवल (A), (B) और (C)

(C) केवल (A), (B) और (D)

(D) केवल (C) और (D)

सही उत्तर: (B) केवल (A), (B) और (C)

हल:

अवधारणा:

- हिंदी में शब्द का व्याकरणिक लिंग उसके मानक प्रयोग से निर्धारित होता है। निर्जीव पदार्थों और भाववाचक शब्दों के लिए भी पुल्लिंग या स्त्रीलिंग रूप प्रयुक्त होते हैं।
- लिंग की पहचान करने के लिए शब्द के साथ आया, आई, अच्छा या अच्छी जैसे संगत रूप लगाकर मानक वाक्य बनाया जा सकता है। शब्द का अंतिम स्वर अकेले निर्णय का आधार नहीं है।

चरण 1: चारों शब्दों का लिंग निर्धारित कीजिए सिन्धु समुद्र के अर्थ में पुल्लिंग शब्द है। दही भी पुल्लिंग है; इसका मानक प्रयोग "दही खट्टा है होता है। पानी पुल्लिंग है, जैसे "पानी ठंडा है। इस प्रकार सूची के (A), (B) और (C) पुल्लिंग हैं। सहायता स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा है; "सहायता मिली कहना उचित है। इसलिए (D) को पुल्लिंग समूह में नहीं रखेंगे।

चरण 2: सही समूह चुनिए विकल्प (B) में केवल (A), (B) और (C) दिए गए हैं, इसलिए यही निर्धारित लिंगों से मेल खाता है। विकल्प (A) में सहायता को पुल्लिंग मान लिया गया है और दही तथा पानी छूट गए हैं। विकल्प (C) में भी सहायता शामिल है और पानी अनुपस्थित है। विकल्प (D) में पानी के साथ सहायता है तथा अन्य दो पुल्लिंग शब्द नहीं हैं। इसलिए ये तीनों समूह स्वीकार्य नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सिन्धु, दही और पानी पुल्लिंग हैं, जबकि सहायता स्त्रीलिंग है। अतः सही उत्तर विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: दही और पानी के साथ अच्छा या ठंडा, तथा सहायता के साथ मिली जैसे मानक प्रयोग रखकर लिंग का भेद तुरंत जाँचें।

---

15. निम्नलिखित विकल्पों में एकवचन वाले शब्द की पहचान कीजिए - [5 अंक]

(A) हस्ताक्षर

(B) प्राण

(C) आंसू

(D) वर्षा

सही उत्तर: (D) वर्षा

हल:

अवधारणा:

- वचन से संज्ञा के एक या अनेक होने का बोध होता है। कुछ शब्द परंपरागत व्याकरणिक प्रयोग में बहुवचन रूप में आते हैं, भले उनका अर्थ किसी एक व्यक्ति से जुड़ा हो।
- वर्षा वर्षण की क्रिया या अवस्था का बोध कराने वाला स्त्रीलिंग एकवचन शब्द है। इसका सामान्य प्रयोग "वर्षा हुई है; शब्द के अंत में

आ आने से वह बहुवचन नहीं बनता।

चरण 1: दिए हुए शब्दों का प्रचलित वचन देखिए हस्ताक्षर का प्रयोग सामान्यतः बहुवचन में किया जाता है, जैसे "आपके हस्ताक्षर चाहिए। प्राण भी बहुवचन में प्रयुक्त होता है, जैसे "उसके प्राण बच गए। आँसू का सामान्य व्याकरणिक वर्गीकरण भी बहुवचन के रूप में दिया जाता है, जैसे "आँसू बहने लगे। इसलिए प्रश्न की परंपरागत वचन-पहचान में इन तीनों को अपेक्षित एकवचन उत्तर नहीं चुनेंगे।

चरण 2: एकवचन प्रयोग का मिलान कीजिए वर्षा के साथ एकवचन क्रिया का सामान्य मेल है: "आज वर्षा हुई। यह वर्षण की एक अवस्था या घटना का नाम है। विकल्प (A) हस्ताक्षर और विकल्प (B) प्राण स्थायी बहुवचन प्रयोग के कारण हटते हैं। विकल्प (C) आँसू सामान्य बहुवचन प्रयोग वाला शब्द है। दिए गए विकल्पों में वर्षा ही एकवचन की अपेक्षित पहचान है; इसलिए विकल्प (D) चुनना उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष दिए गए विकल्पों में एकवचन शब्द वर्षा है। अतः सही उत्तर विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: हस्ताक्षर और प्राण जैसे प्रचलित बहुवचन शब्द अलग याद रखें; वर्षा हुई जैसे छोटे वाक्य से वर्षा का एकवचन प्रयोग पहचानें।

---

16. 'राम अयोध्या से वन को गए' उपर्युक्त वाक्य में किस कारक का चिह्न प्रयुक्त हुआ है? [5 अंक]

(A) करण कारक

(B) अपादान कारक

(C) संबंध कारक

(D) अधिकरण कारक

सही उत्तर: (B) अपादान कारक

हल:

अवधारणा:

- अपादान कारक में किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से अलग होने अथवा चलने के आरंभ-बिंदु का बोध होता है। इसका प्रमुख चिह्न से है।
- केवल परसर्ग देखकर कारक तय नहीं करना चाहिए। से करण का भी चिह्न हो सकता है, लेकिन करण में किसी साधन या माध्यम का अर्थ होता है; अपादान में पृथक्करण या उद्गम का अर्थ होता है।

चरण 1: वाक्य में से का संबंध समझिए "राम अयोध्या से वन को गए में अयोध्या वह स्थान है जहाँ से राम का प्रस्थान हुआ। अयोध्या किसी काम को करने का साधन नहीं है, बल्कि यात्रा का आरंभ-बिंदु है। अयोध्या से अलग होकर वन की ओर जाने का भाव होने के कारण "अयोध्या से में अपादान कारक है। वन को गंतव्य बताता है, पर दिए गए विकल्पों में जिस से-चिह्न का अर्थ उपयुक्त बैठता है, वह अपादान है।

चरण 2: अन्य कारकों से अंतर कीजिए करण कारक साधन बताता है, जैसे कलम से लिखना; यहाँ अयोध्या साधन नहीं है। संबंध कारक में का, के, की जैसे चिह्नों से स्वामित्व या संबंध आता है, जो इस पद में नहीं है। अधिकरण किसी क्रिया का आधार या स्थान बताता है, जैसे वन में रहना; इस वाक्य में अयोध्या में ठहरने का अर्थ नहीं, वहाँ से प्रस्थान का अर्थ है। इसलिए विकल्प (A), (C) और (D) अपेक्षित संबंध नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष "अयोध्या से में स्थान से प्रस्थान और पृथक्करण का भाव है। अतः अपादान कारक प्रयुक्त है और सही उत्तर विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: से दिखने पर पूछें: साधन है या अलग होने का स्थान? साधन हो तो करण, और प्रस्थान का आरंभ-बिंदु हो तो अपादान चुनें।

17. 'प्रविशेषण' निम्नलिखित में से किसकी विशेषता बताता है? [5 अंक]

(A) संज्ञा और सर्वनाम की

(B) संज्ञा और विशेषण की

(C) विशेषण की

(D) सर्वनाम की

सही उत्तर: (C) विशेषण की

हल:

अवधारणा:

- विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है; जिसकी विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं।
- विशेषण की विशेषता या उसकी मात्रा बताने वाला शब्द प्रविशेषण कहलाता है। इसलिए विशेषण और प्रविशेषण के संबंध को अलग पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: प्रविशेषण का संबंध पहचानें वाक्य "यह बहुत सुंदर फूल है" में "फूल" संज्ञा है और "सुंदर" उसकी विशेषता बताने वाला विशेषण है। "बहुत" यह बताता है कि सुंदरता की मात्रा कितनी है। इस प्रकार "बहुत" का सीधा संबंध "सुंदर" से है, इसलिए वह प्रविशेषण है।

चरण 2: सभी विकल्पों की तुलना करें विकल्प (C) में विशेषण की विशेषता बताने की बात है, जो प्रविशेषण की परिभाषा से ठीक मेल खाती है। विकल्प (A) संज्ञा और सर्वनाम से संबंध बताता है; यह विशेषण की भूमिका है। विकल्प (B) संज्ञा को भी प्रविशेषण का सीधा विशेष्य मानता है, इसलिए उपयुक्त नहीं है। विकल्प (D) केवल सर्वनाम की विशेषता बताता है, जो प्रविशेषण का लक्षण नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रविशेषण विशेषण की विशेषता बताता है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: "बहुत अच्छा" में पहले "अच्छा" को विशेषण पहचानें; फिर उसकी मात्रा बताने वाले "बहुत" को प्रविशेषण मानें।

18. विशेषण का लिंग किसके अनुसार परिवर्तित होता है? [5 अंक]

(A) विशेष्य के अनुसार होता है

(B) स्वतंत्र रहता है

(C) सदैव पुलिंग होता है

(D) सदैव स्त्रीलिंग होता है

सही उत्तर: (A) विशेष्य के अनुसार होता है

हल:

अवधारणा:

- विशेषण जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, वह उसका विशेष्य होता है। रूप बदलने वाले विशेषण विशेष्य के लिंग के अनुरूप अपना रूप बदलते हैं।
- सभी विशेषणों का रूप बदलना आवश्यक नहीं है। अविकारी विशेषण का रूप समान रह सकता है, पर लिंग के अनुसार रूप परिवर्तन का आधार विशेष्य ही होता है।

चरण 1: विशेष्य और विशेषण का सामंजस्य देखें "अच्छा लड़का" में लड़का पुल्लिंग है, इसलिए विशेषण का रूप "अच्छा" है। "अच्छी लड़की" में लड़की स्त्रीलिंग है, इसलिए उसी विशेषण का रूप "अच्छी" हो जाता है। दोनों उदाहरण बताते हैं कि रूप परिवर्तन विशेषण की स्वतंत्र पसंद से नहीं, विशेष्य के लिंग के कारण होता है।

चरण 2: दिए गए विकल्पों को जाँचें विकल्प (A) विशेष्य को परिवर्तन का आधार बताता है, इसलिए सही है। विकल्प (B) का स्वतंत्र रहना रूप बदलने वाले विशेषणों के लिए गलत है। विकल्प (C) और (D) भी गलत हैं, क्योंकि विशेषण सदैव केवल पुल्लिंग या केवल

स्त्रीलिंग नहीं होता। “अच्छा” और “अच्छी” दोनों रूप प्रयोग में आते हैं। “सुंदर लड़का” और “सुंदर लड़की” जैसे अविकारी रूप इस सामान्य संबंध का खंडन नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष विशेषण का लिंग विशेष्य के अनुसार परिवर्तित होता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले उस संज्ञा को खोजें जिसकी विशेषता बताई जा रही है; “अच्छा लड़का” और “अच्छी लड़की” से लिंग का सामंजस्य जाँचें।

---

19. निम्नलिखित वाक्यों में किसमें पूर्वकालिक क्रिया नहीं है? [5 अंक]

(A) वह खाकर विद्यालय जाता है।

(B) वह खाकर टहलता है।

(C) वह लेटकर खाता है।

(D) वह खाकर नहाता है।

सही उत्तर: (C) वह लेटकर खाता है।

हल:

अवधारणा:

- पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले पूरी हो चुकी क्रिया को व्यक्त करती है। इसके लिए प्रायः धातु के साथ “कर” या “करके” का प्रयोग होता है।
- केवल “कर” जुड़ा होना निर्णय के लिए पर्याप्त नहीं है। वाक्य का अर्थ देखना चाहिए कि पहली क्रिया पहले समाप्त होती है या मुख्य क्रिया के साथ बनी रहती है।

चरण 1: पहले पूरी होने वाली क्रिया पहचानें “वह खाकर विद्यालय जाता है” में खाना पहले समाप्त होता है, फिर विद्यालय जाना होता है। “वह खाकर टहलता है” में खाने के बाद टहलना और “वह खाकर नहाता है” में खाने के बाद नहाना होता है। इसलिए विकल्प (A), (B) और (D) में “खाकर” पूर्वकालिक क्रिया का काम करता है।

चरण 2: लेटने और खाने का संबंध देखें “वह लेटकर खाता है” में व्यक्ति खाने के समय भी लेटी हुई अवस्था में रहता है। यहाँ लेटना खाने से पहले समाप्त हो गई अलग क्रिया के रूप में व्यक्त नहीं है; यह खाने की अवस्था या रीति बताता है। इसलिए प्रश्न में पूछे गए नकारात्मक रूप, अर्थात् पूर्वकालिक क्रिया नहीं होने वाले वाक्य, के लिए विकल्प (C) उपयुक्त है। केवल “लेटकर” के रूप को देखकर उसे पूर्वकालिक मानना अर्थ की इस भिन्नता को छोड़ देना होगा।

चरण 3: निष्कर्ष “वह लेटकर खाता है” में लेटी हुई अवस्था खाने के साथ रहती है, इसलिए इसमें पूर्वकालिक क्रिया नहीं है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: “कर” वाले शब्द पर रुकने के बजाय पूछें कि क्रिया पहले समाप्त हुई या मुख्य क्रिया के समय उसकी अवस्था बनी रही।

---

20. निम्नलिखित शब्दों को अकर्मक, सकर्मक, संयुक्त क्रिया और प्रेरणार्थक क्रिया के क्रम में संयोजित कीजिए -

(A). सोना

(B). पढ़ना

(C). गिर पड़ना

(D). बनवाना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें : [5 अंक]

(A) (A), (B), (C), (D)

(B) (A), (C), (B), (D)

(C) (B), (A), (D), (C)

(D) (C), (B), (D), (A)

सही उत्तर: (A) (A), (B), (C), (D)

हल:

अवधारणा:

- अकर्मक क्रिया में कर्म की आवश्यकता नहीं होती, जबकि सकर्मक क्रिया का प्रभाव किसी कर्म पर पड़ता है। इनकी पहचान वाक्य के अर्थ और क्रिया से पूछे गए प्रश्न से की जाती है।
- संयुक्त क्रिया में दो क्रियाएँ मिलकर एक क्रियात्मक अर्थ व्यक्त करती हैं। प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता स्वयं काम करने के बजाय किसी दूसरे से काम करवाता है।

चरण 1: प्रत्येक शब्द का क्रिया भेद निर्धारित करें (A) "सोना" अकर्मक है, क्योंकि "बच्चा सोता है" में किसी कर्म की आवश्यकता नहीं होती। (B) "पढ़ना" सकर्मक है; "वह पुस्तक पढ़ता है" में पुस्तक कर्म है और "क्या पढ़ता है?" का उत्तर देती है। (C) "गिर पड़ना" संयुक्त क्रिया है, जिसमें "गिर" और "पड़ना" मिलकर अचानक गिरने का भाव देते हैं। (D) "बनवाना" प्रेरणार्थक है, क्योंकि इसमें किसी अन्य से बनाने का काम कराया जाता है।

चरण 2: माँगे गए क्रम से विकल्प मिलाएँ प्रश्न का क्रम अकर्मक, सकर्मक, संयुक्त और प्रेरणार्थक है। इसलिए शब्दों का क्रम सोना, पढ़ना, गिर पड़ना, बनवाना, अर्थात् (A), (B), (C), (D) होगा। यही क्रम विकल्प (A) में है। विकल्प (B) सकर्मक और संयुक्त का स्थान बदलता है। विकल्प (C) पढ़ना को अकर्मक और सोना को सकर्मक स्थान देता है। विकल्प (D) संयुक्त क्रिया को आरंभ में और अकर्मक क्रिया को अंत में रखता है। इसलिए अन्य तीनों क्रम सही नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही क्रम सोना, पढ़ना, गिर पड़ना, बनवाना है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: "क्या?" से कर्म खोजें, दो क्रियाओं के मेल को पहचानें और "किसी से करवाना" वाला भाव देखकर प्रेरणार्थक क्रिया चुनें।

21. क्रिया विशेषण कितने प्रकार के होते हैं? [5 अंक]

(A) तीन

(B) चार

(C) पांच

(D) छह

सही उत्तर: (B) चार

हल:

अवधारणा:

- क्रिया की विशेषता बताने वाले अविकारी शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं। ये बताते हैं कि कार्य कब, कहाँ, कितना या किस प्रकार होता है।
- अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण के चार मुख्य भेद हैं: कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक और रीतिवाचक।

चरण 1: चारों अर्थगत भेद पहचानिए कालवाचक क्रिया विशेषण समय बताता है, जैसे 'वह आज आएगा' में 'आज'। स्थानवाचक स्थान बताता है, जैसे 'वह यहाँ बैठा है' में 'यहाँ'। परिमाणवाचक मात्रा बताता है, जैसे 'वह बहुत बोलता है' में 'बहुत'। रीतिवाचक ढंग बताता है, जैसे 'वह धीरे चलता है' में 'धीरे'। इस प्रकार चार अलग प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं: कब, कहाँ, कितना और कैसे।

चरण 2: विकल्पों से संख्या मिलाइए इन चार मुख्य भेदों की संख्या विकल्प (B) के 'चार' से मेल खाती है। विकल्प (A) का 'तीन' एक मुख्य भेद को छोड़ देता है। विकल्प (C) का 'पांच' और विकल्प (D) का 'छह' अर्थ के आधार पर होने वाले इस प्रचलित मुख्य वर्गीकरण की संख्याएँ नहीं हैं। अलग-अलग भेदों के अंतर्गत अनेक शब्द आ सकते हैं, पर शब्दों या उदाहरणों की संख्या को मुख्य भेदों की संख्या नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: 'कब, कहाँ, कितना, कैसे' याद रखें; ये क्रमशः काल, स्थान, परिमाण और रीति के चार भेद बताते हैं।

22. 'मैं आप चला जाऊंगा' - इस वाक्य में 'आप' कौन सा सर्वनाम है? [5 अंक]

(A) पुरुषवाचक सर्वनाम

(B) निश्चयवाचक सर्वनाम

(C) निजवाचक सर्वनाम

(D) संबंधवाचक सर्वनाम

सही उत्तर: (C) निजवाचक सर्वनाम

हल:

अवधारणा:

- निजवाचक सर्वनाम कर्ता के अपने आप या स्वयं का बोध कराता है। इसका अर्थ उसी कर्ता की ओर लौटता है जिसके कार्य का उल्लेख वाक्य में है।
- 'आप' का भेद केवल शब्द देखकर नहीं, वाक्य में उसके अर्थ और प्रयोग से तय होता है। संबोधन में आदर के लिए प्रयुक्त 'आप' और 'स्वयं' के अर्थ वाला 'आप' अलग प्रयोग हैं।

चरण 1: वाक्य में आप का अर्थ समझिए 'मैं आप चला जाऊंगा' में बोलने वाला अपने ही जाने की बात कह रहा है। यहाँ 'आप' का अर्थ किसी दूसरे आदरणीय व्यक्ति से नहीं है। वाक्य का आशय है, 'मैं स्वयं चला जाऊंगा' या 'मैं अपने आप चला जाऊंगा'। इसलिए 'आप' का संबंध वाक्य के कर्ता 'मैं' से है और वह उसी के स्वयं कार्य करने पर बल देता है। यह निजवाचक प्रयोग है।

चरण 2: अन्य सर्वनामों से अंतर कीजिए पुरुषवाचक सर्वनाम वक्ता, श्रोता अथवा अन्य व्यक्ति का बोध कराते हैं; इस वाक्य में 'मैं'

पुरुषवाचक है, पर पूछा गया शब्द 'आप' है। यदि 'आप' श्रोता के लिए आदरसूचक होता, तो उसका पुरुषवाचक प्रयोग होता; यहाँ ऐसा नहीं है। निश्चयवाचक सर्वनाम किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करता है, जैसे 'यह' और 'वह'। संबंधवाचक सर्वनाम 'जो' जैसे शब्दों से संबंध जोड़ता है। यहाँ न संकेत है न वैसा संबंध; अतः ये दोनों भेद भी लागू नहीं होते।

चरण 3: निष्कर्ष 'आप' का अर्थ 'स्वयं' है, इसलिए वह निजवाचक सर्वनाम है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: 'आप' के स्थान पर 'स्वयं' रखकर अर्थ जाँचें; अर्थ वही रहे और कर्ता पर लौटे, तो निजवाचक प्रयोग पहचानें।

---

23. निम्नलिखित में कौन से विकल्प सुमेलित हैं?

A. बैठी हूँ - आसन्न भूतकाल

B. बैठी थी - पूर्णभूतकाल

C. बैठती थी - संदिग्ध भूतकाल

D. बैठी होती - हेतुहेतुमद भूतकाल

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें : [5 अंक]

(A) केवल (A), (B) और (D)

(B) केवल (A), (B) और (C)

(C) (A), (B), (C) और (D)

(D) केवल (B), (C) और (D)

सही उत्तर: (A) केवल (A), (B) और (D)

हल:

अवधारणा:

- भूतकाल के भेद क्रिया के समाप्त होने के समय, उसके अभ्यस्त रूप, संभावना अथवा शर्त के आधार पर पहचाने जाते हैं। सहायक क्रिया और वाक्य के भाव को साथ देखना आवश्यक है।
- आसन्न भूतकाल में कार्य के अभी पूरा होने का बोध, पूर्णभूतकाल में पहले पूरा हो चुके कार्य का बोध और हेतुहेतुमद भूतकाल में शर्त अथवा कारण पर आश्रित भूतकालिक स्थिति का बोध होता है।

चरण 1: सही सुमेलनों की जाँच कीजिए (A) में 'बैठी हूँ' पूर्ण क्रिया के साथ 'हूँ' का प्रयोग है। दिए गए वर्गीकरण में यह अभी पूरे हुए कार्य का आसन्न भूतकाल है। (B) का 'बैठी थी' पहले ही पूरा हो चुके कार्य को बताता है, इसलिए पूर्णभूतकाल से उसका मेल सही है। (D) में 'बैठी होती' शर्त से जुड़ी काल्पनिक भूतकालिक स्थिति का रूप है; जैसे किसी शर्त के पूरे होने पर बैठी होती। इसलिए इसका हेतुहेतुमद भूतकाल से मेल सही है।

चरण 2: गलत सुमेलन हटाकर विकल्प चुनिए (C) का 'बैठती थी' भूतकाल की आदत अथवा बार-बार होने वाली क्रिया व्यक्त करता है। यह अपूर्ण भूतकाल है, संदिग्ध भूतकाल नहीं। संदिग्ध भूतकाल में 'बैठी होगी' जैसे रूप से बीते कार्य के विषय में अनुमान या संदेह व्यक्त होता है। अतः (C) गलत है। विकल्प (B), (C) और (D) सभी इस गलत सुमेलन को शामिल करते हैं, इसलिए उन्हें हटाना चाहिए। केवल (A), (B) और (D) का समूह बचता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन आसन्न भूतकाल, पूर्णभूतकाल और हेतुहेतुमद भूतकाल के हैं; बैठती थी को संदिग्ध भूतकाल कहना गलत है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: 'ती थी' में अभ्यस्त भूतकाल और 'होगी' में अनुमान का अंतर याद रखें; इससे 'बैठती थी' को संदिग्ध मानने की भूल नहीं होगी।

---

24. **निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त संधि को पहचान कर इन्हें दीर्घ, गुण, वृद्धि और यण संधि के क्रम में संयोजित कीजिए -**

(A). सूक्ति

(B). मतैक्य

(C). स्वागत

(D). महोत्सव

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें : [5 अंक]

(A) (A), (B), (C), (D)

(B) (A), (D), (B), (C)

(C) (B), (A), (D), (C)

(D) (C), (B), (D), (A)

सही उत्तर: (B) (A), (D), (B), (C)

हल:

अवधारणा:

- संधि का प्रकार पहचानने के लिए शब्द का संधि-विच्छेद करके मिलने वाले स्वरों और बने हुए स्वर अथवा वर्ण को देखा जाता है।
- दीर्घ में समान स्वर मिलकर दीर्घ स्वर बनाते हैं। गुण में अ या आ के साथ उ या ऊ मिलने पर ओ बनता है। वृद्धि में अ या आ के साथ ए या ऐ मिलने पर ऐ बनता है। यण में उ के बाद भिन्न स्वर आए तो उ का व् हो सकता है।

चरण 1: प्रत्येक शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए (A) 'सूक्ति' का विच्छेद 'सु + उक्ति' है। उ और उ के मिलने से ऊ बना है, इसलिए यह दीर्घ संधि है। (D) 'महोत्सव' का विच्छेद 'महा + उत्सव' है। आ और उ के मिलने से ओ बना है, इसलिए यह गुण संधि है। (B) 'मतैक्य' का विच्छेद 'मत + ऐक्य' है। अ और ऐ के मिलने से ऐ बनता है, इसलिए यह वृद्धि संधि है। (C) 'स्वागत' का विच्छेद 'सु + आगत' है। उ का व् हुआ है, इसलिए यह यण संधि है।

चरण 2: माँगे गए क्रम में अक्षर रखिए प्रश्न का क्रम दीर्घ, गुण, वृद्धि और यण है। इनके लिए क्रमशः (A), (D), (B) और (C) मिलते हैं। विकल्प (A) में गुण के स्थान पर वृद्धि वाला शब्द आ जाता है। विकल्प (C) वृद्धि वाले शब्द से आरंभ होता है और विकल्प (D) यण वाले शब्द से आरंभ होता है; दोनों का पहला ही स्थान गलत है। सही क्रम केवल विकल्प (B) में है। संधि-विच्छेद के बाद अक्षर चुनने से शब्दों की सूची के क्रम का भ्रम दूर होता है।

चरण 3: निष्कर्ष दीर्घ के लिए सूक्ति, गुण के लिए महोत्सव, वृद्धि के लिए मतैक्य और यण के लिए स्वागत का क्रम सही है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले सूक्ति का 'उ + उ', महोत्सव का 'आ + उ', मतैक्य का 'अ + ऐ' और स्वागत का 'उ से व्' पहचानें, फिर क्रम बनाएँ।

25. 'धनु:+ टंकार' की उचित संधि होगी - [5 अंक]

(A) धनु:टंकार

(B) धनुस्टंकार

(C) धनुष्टंकार

(D) धनुश्टंकार

सही उत्तर: (C) धनुष्टंकार

हल:

अवधारणा:

- विसर्ग संधि में विसर्ग के बाद आने वाले वर्ण के प्रभाव से उसका रूप बदल सकता है। इसलिए संधि करते समय केवल शब्दों को जोड़ना पर्याप्त नहीं, वर्णों का क्रम भी देखना चाहिए।
- यहाँ विसर्ग से पहले उकार है और आगे टकार है। इस स्थिति में विसर्ग का षकार हो जाता है तथा ष् और ट के मिलने से ष्ट का संयुक्त रूप बनता है।

चरण 1: संधि के स्थान पर वर्ण पहचानिए दिए हुए पद धनु: और टंकार हैं। धनु: का अंतिम स्वर उ है और दूसरे पद का पहला व्यंजन ट है। इसलिए यह स्वर संधि नहीं, विसर्ग संधि का प्रसंग है। उकार के बाद स्थित विसर्ग को टकार से मिलाते समय ष् में बदलेंगे।

चरण 2: परिवर्तन लागू करके विकल्प जाँचिए धनु: + टंकार में विसर्ग के स्थान पर ष् रखने पर धनु + ष् + टंकार मिलता है। ष् + ट का संयुक्त व्यंजन ष्ट है, अतः संयुक्त पद धनुष्टंकार होगा। विकल्प (A) में विसर्ग ज्यों का त्यों रखा गया है। विकल्प (B) में स् और विकल्प (D) में श् प्रयुक्त है; यहाँ अपेक्षित मूर्धन्य ष् के स्थान पर ये दोनों उचित नहीं हैं। केवल विकल्प (C) में सही परिवर्तन और सही संयुक्त व्यंजन है।

चरण 3: निष्कर्ष धनु: + टंकार की उचित संधि धनुष्टंकार है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: विसर्ग संधि में पहले विसर्ग से पहले का स्वर और उसके बाद का व्यंजन पहचानें; यहाँ उ और ट का क्रम ष्ट वाला रूप चुनने में निर्णायक है।

---

26. सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए :

सूची -I सामासिक पद	सूची -II समास का नाम
(A). आजीवन	(I). द्विगु समास
(B). शत्रुघ्न	(II). तत्पुरुष समास
(C). मृगनैनी	(III). अव्ययीभाव समास
(D). दुसूती	(IV). कर्मधारय समास

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए : [5 अंक]

(A) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (III), (D) - (IV)

(B) (A) - (I), (B) - (III), (C) - (II), (D) - (IV)

(C) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (IV), (D) - (III)

(D) (A) - (III), (B) - (II), (C) - (IV), (D) - (I)

सही उत्तर: (D) (A) - (III), (B) - (II), (C) - (IV), (D) - (I)

हल:

अवधारणा:

- समास की पहचान सामासिक पद के अर्थ और विग्रह से होती है। अव्ययीभाव में अव्यय का अर्थ प्रधान, तत्पुरुष में उत्तरपद प्रधान और द्विगु में संख्यावाचक पूर्वपद मिलता है।
- कर्मधारय में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध होता है। मिलान वाले प्रश्न में प्रत्येक पद का स्वतंत्र विग्रह करके पूरी क्रम-सूची जाँचनी चाहिए।

चरण 1: पहले दो पदों का विग्रह कीजिए आजीवन का अर्थ जीवन भर है। यहाँ आ का अर्थगत प्रभाव पूरे पद पर है और पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है; इसलिए आजीवन अव्ययीभाव समास है। अतः (A) का मिलान (III) से होगा। शत्रुघ्न का विग्रह शत्रु को मारने वाला है। इसमें कर्म का संबंध है और उत्तरपद प्रधान है, इसलिए यह तत्पुरुष समास है। अतः (B) का मिलान (II) से होगा।

चरण 2: शेष पदों को मिलाकर सही क्रम चुनिए मृगनैनी में मृग के नयनों के समान नयनों की उपमा है। दी हुई सूची में इस उपमान-उपमेय संबंध का नाम कर्मधारय है; अतः (C) का मिलान (IV) से होगा। दुसूती का आशय दो सूतों वाला है; संख्या दो के आधार पर यह द्विगु समास है, इसलिए (D) का मिलान (I) से होगा। पूरा क्रम (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I) है। विकल्प (A), (B) और (C) आजीवन को द्विगु से जोड़ते हैं, जबकि उसमें संख्यावाचक पूर्वपद नहीं है। इसलिए वे गलत हैं। विकल्प (D) ही चारों संबंध सही देता है।

चरण 3: निष्कर्ष आजीवन-अव्ययीभाव, शत्रुघ्न-तत्पुरुष, मृगनैनी-कर्मधारय और दुसूती-द्विगु का मिलान सही है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले आजीवन जैसे स्पष्ट अव्ययीभाव पद को मिलाएँ; उसका (III) से संबंध तय होने पर गलत क्रम तुरंत अलग हो जाते हैं, फिर शेष मिलान भी अवश्य जाँचें।

---

27. 'हरिशंकर' में कौन सा समास है? [5 अंक]

(A) अव्ययीभाव समास

(B) कर्मधारय समास

(C) द्वन्द्व समास

(D) बहुव्रीहि समास

सही उत्तर: (C) द्वन्द्व समास

हल:

अवधारणा:

- द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। इसका विग्रह करते समय दोनों पदों के बीच और, अथवा आदि समुच्चयबोधक शब्द लगते हैं।
- समास का प्रकार शब्द के रूप मात्र से नहीं, उसके पदों के संबंध और अर्थ से निश्चित होता है। हरि और शंकर दो देवताओं के नाम हैं; यहाँ दोनों का समान महत्त्व है।

चरण 1: सामासिक पद के घटक अलग कीजिए हरिशंकर में हरि और शंकर दो पद हैं। हरि विष्णु का तथा शंकर शिव का नाम है। इस पद का विग्रह हरि और शंकर किया जाता है। इसमें पहला पद दूसरे का विशेषण नहीं बनता और न ही किसी एक पद को गौण करके केवल दूसरे का अर्थ ग्रहण किया जाता है। दोनों नाम साथ-साथ आते हैं।

चरण 2: विग्रह से समास पहचानिए हरि और शंकर में और का संबंध तथा दोनों पदों की प्रधानता द्वन्द्व समास की पहचान है। अव्ययीभाव में अव्यय पद प्रधान होता है, पर यहाँ कोई अव्यय नहीं है, अतः विकल्प (A) उचित नहीं। कर्मधारय में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का संबंध होता है; हरि शंकर का विशेषण नहीं है, इसलिए विकल्प (B) भी नहीं। बहुव्रीहि में दोनों पद मिलकर किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं; यहाँ ऐसा अन्यपदार्थ का संबंध नहीं लिया गया है, इसलिए विकल्प (D) नहीं चुना जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष हरिशंकर का विग्रह हरि और शंकर है। दोनों पद प्रधान होने के कारण इसमें द्वन्द्व समास है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दो नामों वाले समास में पहले उनके बीच और लगाकर विग्रह करें; यदि दोनों का अर्थ समान रूप से प्रधान रहे, तो द्वन्द्व समास पहचानें।

28. निम्नलिखित में कौन सा शब्द 'अधि' उपसर्ग से निर्मित नहीं है? [5 अंक]

(A) अधिपति

(B) अध्ययन

(C) अधिकार

(D) अधुनातन

सही उत्तर: (D) अधुनातन

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग वह शब्दांश है जो किसी मूल शब्द या धातु से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न करता है। उपसर्ग की पहचान के लिए शब्द की व्युत्पत्ति देखनी चाहिए।
- केवल अध से शुरू होने के कारण हर शब्द में अधि उपसर्ग नहीं माना जा सकता। संधि के कारण अधि का इकार दूसरे स्वर के सामने यकार के रूप में भी दिखाई दे सकता है।

चरण 1: अधि से बने शब्द पहचानिए अधिपति में अधि और पति मिलते हैं; इसका अर्थ स्वामी अथवा प्रधान है। अधिकार भी अधि से बना शब्द है। अध्ययन में अधि और अयन का योग है; इ के बाद अ आने पर यण संधि से य का रूप बनता है। इसीलिए अध्ययन में अधि स्पष्ट रूप से अलग न दिखाई देने पर भी उसकी व्युत्पत्ति में उपस्थित है। अतः पहले तीन शब्द अधि उपसर्ग से संबंधित हैं।

चरण 2: भिन्न व्युत्पत्ति वाला शब्द चुनिए अधुनातन का आधार अधुना है, जिसका अर्थ अब या वर्तमान समय में है। उससे अधुनातन का अर्थ वर्तमानकालीन अथवा आधुनिक होता है। इस शब्द में अधि उपसर्ग को अलग करके मूल शब्द नहीं मिलता; इसकी शुरुआत अधुना शब्द का ही भाग है। प्रश्न में नहीं शब्द पर ध्यान देना आवश्यक है: अधिपति, अध्ययन और अधिकार को चुनने के बजाय उस शब्द को चुनना है जिसकी रचना अधि से नहीं हुई। इस जाँच में केवल अधुनातन बचता है।

चरण 3: निष्कर्ष अधुनातन शब्द अधि उपसर्ग से निर्मित नहीं है; उसका आधार अधुना है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: उपसर्ग वाले नकारात्मक प्रश्न में पहले नहीं को चिह्नित करें और फिर मूल शब्द खोजें; समान शुरुआती अक्षरों को ही उपसर्ग मानकर उत्तर न दें।

29. निम्नलिखित में कौन सा 'आई' प्रत्यय से निर्मित शब्द नहीं है? [5 अंक]

(A) पंडिताई

(B) हँसाई

(C) दुखदायी

(D) चतुराई

सही उत्तर: (C) दुखदायी

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यय वह शब्दांश है जो किसी मूल शब्द या धातु के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाता है। प्रत्यय की पहचान केवल अंतिम अक्षरों से नहीं, शब्द की रचना से करनी चाहिए।
- आई प्रत्यय से पंडिताई, हँसाई और चतुराई जैसे शब्द बनते हैं; इनके विपरीत दुखदायी का अंत दायी है।

चरण 1: आई वाले शब्दों को अलग करें पंडित में आई जोड़ने से पंडिताई तथा चतुर में आई जोड़ने से चतुराई बनता है। इसी तरह हँसाई में भी आई प्रत्यय की पहचान होती है। इन शब्दों में मूल आधार के बाद एक ही प्रत्यय लगने का ढाँचा दिखाई देता है। इसलिए विकल्प (A), (B) और (D) प्रश्न में पूछे गए अपवाद नहीं हैं।

चरण 2: दुखदायी की रचना देखें दुखदायी का अर्थ दुख देने वाला है। यहाँ दायी का संबंध देने वाले अर्थ से है; शब्द को दुख + आई मानने से उसका वास्तविक रूप और अर्थ दोनों नहीं बनते। अंतिम यी की ध्वनि को आई प्रत्यय समझना उचित नहीं है। अतः दुखदायी बाकी तीन शब्दों की आई-प्रत्यय वाली श्रेणी में नहीं आता।

चरण 3: निष्कर्ष दुखदायी, आई प्रत्यय से निर्मित शब्द नहीं है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रत्यय पहचानते समय मूल शब्द को अलग करके देखें; केवल शब्द के आखिरी उच्चारण का मेल पर्याप्त नहीं है।

---

30. सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए :

सूची -I रस	सूची -II स्थायी भाव
(A). रौद्र	(I). शोक
(B). वीभत्स रस	(II). निर्वेद
(C). शांत रस	(III). जुगुप्सा
(D). करुण रस	(IV). क्रोध

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए : [5 अंक]

(A) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (III), (D) - (IV)

(B) (A) - (IV), (B) - (III), (C) - (II), (D) - (I)

(C) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (IV), (D) - (III)

(D) (A) - (III), (B) - (IV), (C) - (I), (D) - (II)

सही उत्तर: (B) (A) - (IV), (B) - (III), (C) - (II), (D) - (I)

हल:

अवधारणा:

- रस का आधार स्थायी भाव होता है। विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के सहयोग से यही स्थायी भाव रस के रूप में आस्वादित होता है।
- रौद्र का स्थायी भाव क्रोध, वीभत्स का जुगुप्सा, शांत का निर्वेद और करुण का शोक है।

चरण 1: प्रत्येक रस को उसके भाव से जोड़ें रौद्र रस में उग्रता और क्रोध प्रमुख हैं, इसलिए (A) का मिलान (IV) से होगा। वीभत्स रस घृणा या जुगुप्सा पर आधारित है, इसलिए (B) का मिलान (III) से होगा। शांत रस में संसार के प्रति विरक्ति या निर्वेद प्रधान रहता है, अतः (C) का मिलान (II) से होगा। करुण रस दुख और शोक से उत्पन्न होता है, इसलिए (D) का मिलान (I) से होगा।

चरण 2: मिलान को विकल्पों में पहचानें प्राप्त क्रम (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I) है, जो विकल्प (B) में दिया गया है। विकल्प (A) रौद्र को शोक से जोड़ता है। विकल्प (C) भी रौद्र का भाव शोक बताता है और शांत को क्रोध से जोड़ता है। विकल्प (D) रौद्र को जुगुप्सा से जोड़ता है। इसलिए शेष तीनों पूर्णतः सही मिलान नहीं देते।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन रौद्र–क्रोध, वीभत्स–जुगुप्सा, शांत–निर्वेद और करुण–शोक है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले रौद्र–क्रोध और करुण–शोक जैसे स्पष्ट जोड़े बाँधें, फिर बाकी दो रसों के भाव मिलाएँ।

---

31. निम्नलिखित में कौन सी विशेषता 'दोहा' छंद की नहीं है? [5 अंक]

(A) दोहा के पहले और तीसरे चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ होती हैं।

(B) दोहा के दूसरे और चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं।

(C) यह एक विषम मात्रिक छंद है।

(D) दोहा, सोरठे का उल्टा होता है।

सही उत्तर: (C) यह एक विषम मात्रिक छंद है।

हल:

अवधारणा:

- दोहा अर्धसम मात्रिक छंद है। इसमें पहले और तीसरे चरण की मात्राएँ समान तथा दूसरे और चौथे चरण की मात्राएँ समान होती हैं।
- दोहा के चरणों का मात्रा-क्रम 13, 11, 13, 11 होता है। सोरठे में इस व्यवस्था का क्रम 11, 13, 11, 13 हो जाता है।

चरण 1: दिए हुए मात्रा-विधान को जाँचें विकल्प (A) के अनुसार पहले और तीसरे चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ हैं; यह दोहे का सही विधान है। विकल्प (B) में दूसरे और चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ बताई गई हैं; यह भी सही है। दोहे के चारों चरण समान नहीं होते, लेकिन पहला तीसरे से और दूसरा चौथे से मिलता है। यही जोड़े वाला विधान उसे अर्धसम बनाता है।

चरण 2: गलत वर्गीकरण पहचानें विकल्प (C) दोहे को विषम मात्रिक छंद कहता है। यह उसका सही वर्गीकरण नहीं है, क्योंकि उसके चरण निश्चित रूप से दो समान जोड़ों में व्यवस्थित होते हैं। विकल्प (D) में दोहे को सोरठे का उल्टा कहा गया है; मात्रा-व्यवस्था के आधार पर यह कथन स्वीकार्य है। प्रश्न में उस विशेषता को चुनना है जो दोहे की नहीं है, इसलिए गलत वर्गीकरण वाला विकल्प चुना जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष दोहा विषम मात्रिक नहीं, अर्धसम मात्रिक छंद है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दोहा के लिए 13–11 का जोड़ा दो बार याद रखें; सोरठे में यही जोड़ा 11–13 हो जाता है।

32. निम्नलिखित उदाहरणों को उपमा, रूपक, यमक और श्लेष अलंकार के क्रम में संयोजित कीजिए -

(A). काली घटा का घमंड घटा

(B). जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय, बारे उजियारे करै, बढ़े अंधेरो होय|

(C). कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा

(D). राम कृपा भव निसा सिरानी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें : [5 अंक]

(A) (A), (B), (C), (D)

(B) (A), (C), (B), (D)

(C) (B), (A), (D), (C)

(D) (C), (D), (A), (B)

सही उत्तर: (D) (C), (D), (A), (B)

हल:

अवधारणा:

- उपमा में सम या जैसे आदि के माध्यम से तुलना होती है; रूपक में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप होता है।
- यमक में एक शब्द की पुनरावृत्ति अलग-अलग अर्थों में होती है। श्लेष में एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ एक साथ प्रकट होते हैं।

चरण 1: उपमा और रूपक के उदाहरण चुनें उदाहरण (C), कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा, में वचनों की तुलना अनेक वज्रों से सम के द्वारा की गई है; अतः यह उपमा है। उदाहरण (D), राम कृपा भव निसा सिरानी, में संसार पर रात्रि का आरोप है। भव को निसा मान लिया गया है; इसलिए यह रूपक है। इस प्रकार माँगे गए क्रम के पहले दो स्थान (C), (D) होंगे।

चरण 2: यमक और श्लेष का भेद लगाएँ उदाहरण (A) में घटा शब्द पहले काले बादल के अर्थ में और फिर कम होने के अर्थ में आया है। पुनरावृत्ति के साथ अर्थ बदलने के कारण यह यमक है। उदाहरण (B) में बारे और बढ़े जैसे शब्द दीपक तथा कुपुत्र, दोनों संदर्भों में अलग अर्थ देते हैं; इसलिए यह श्लेष है। पूरा क्रम (C), (D), (A), (B) बनता है। शेष तीन विकल्पों में यह क्रम नहीं है, इसलिए वे माँगे गए अलंकारों का सही अनुक्रम नहीं देते।

चरण 3: निष्कर्ष क्रमशः तीसरा, चौथा, पहला और दूसरा उदाहरण उपमा, रूपक, यमक तथा श्लेष के हैं। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: सम से उपमा पहचानें, फिर घटा की दो आवृत्तियों से यमक तय करें; इससे क्रम के दो स्थान तुरंत निश्चित हो जाते हैं।

---

33. निम्नलिखित में कौन अर्थालंकार का उदाहरण नहीं है ?

A. यमक

B. रूपक

C. उत्प्रेक्षा

D. श्लेष

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें : [5 अंक]

(A) केवल (A) और (D)

(B) केवल, (B) और (C)

(C) केवल (A), (B), (C)

(D) केवल (B), (C) और (D)

सही उत्तर: (A) केवल (A) और (D)

हल:

अवधारणा:

- शब्दालंकार में शब्दों की ध्वनि, आवृत्ति या विशेष प्रयोग से चमत्कार आता है; अर्थालंकार में अर्थ की विशेष कल्पना या संबंध प्रधान होता है।
- यमक और श्लेष शब्दालंकार हैं, जबकि रूपक और उत्प्रेक्षा अर्थालंकार हैं। प्रश्न में अर्थालंकार नहीं होने वाले नाम चुनने हैं।

चरण 1: प्रत्येक अलंकार का वर्ग पहचानें यमक में एक ही रूप वाले शब्द का भिन्न अर्थों में पुनः प्रयोग होता है। यह शब्द की पुनरावृत्ति पर निर्भर है। श्लेष में एक शब्द से अनेक अर्थ निकलते हैं और चमत्कार उसी शब्द की अर्थबहुलता से आता है। अतः सूची के (A) यमक और (D) श्लेष शब्दालंकार हैं।

चरण 2: अर्थालंकारों को अलग करें रूपक में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप होता है। उत्प्रेक्षा में उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है। दोनों में अर्थगत संबंध या कल्पना प्रधान है, इसलिए (B) रूपक और (C) उत्प्रेक्षा अर्थालंकार हैं। प्रश्न में निषेधसूचक नहीं पर ध्यान देने से इन्हें उत्तर में शामिल नहीं करना चाहिए।

चरण 3: विकल्पों का मिलान करें विकल्प (A) केवल सूची के (A) और (D) को चुनता है, इसलिए ठीक है। विकल्प (B) अर्थालंकारों को ही चुनता है। विकल्प (C) में रूपक और उत्प्रेक्षा अनुचित रूप से आ गए हैं तथा श्लेष छूट गया है। विकल्प (D) में भी रूपक और उत्प्रेक्षा सम्मिलित हैं और यमक छूट गया है।

चरण 4: निष्कर्ष यमक और श्लेष अर्थालंकार नहीं, शब्दालंकार हैं। अतः यमक तथा श्लेष वाला विकल्प (A) सही है।

त्वरित सुझाव: नामों के आगे पहले शब्दालंकार या अर्थालंकार लिखें; फिर प्रश्न में नहीं देखकर उलटी श्रेणी चुनें।

---

34. निम्नलिखित में कौन सा शुद्ध वाक्य नहीं है? [5 अंक]

(A) मैं पैदल चलने का अभ्यासी हूँ।

(B) विमला ने गीत गाया।

(C) उसे मृत्युदंड मिला।

(D) राम, सीता और लक्ष्मण गए।

सही उत्तर: (A) मैं पैदल चलने का अभ्यासी हूँ।

हल:

अवधारणा:

- वाक्य की शुद्धता केवल लिंग और वचन से नहीं, उपयुक्त शब्द-प्रयोग तथा प्रचलित वाक्य-संरचना से भी तय होती है।
- किसी क्रिया को नियमित रूप से करने का आदी होने के अर्थ में उसके अभ्यस्त होने का प्रयोग होता है। इस प्रश्न में अशुद्ध वाक्य पहचानना है।

चरण 1: पहले वाक्य का शब्द-प्रयोग जाँचें मैं पैदल चलने का अभ्यासी हूँ में अभ्यासी के स्थान पर अभ्यस्त का प्रयोग अपेक्षित है। अभ्यासी अभ्यास करने वाले साधक या विद्यार्थी का बोध करा सकता है, लेकिन यहाँ पैदल चलने की आदत बताई जा रही है। मानक वाक्य होगा: मैं पैदल चलने का अभ्यस्त हूँ। इसलिए दिए गए विकल्पों में पहला वाक्य अशुद्ध माना गया है।

चरण 2: शेष वाक्यों का सामंजस्य जाँचें विमला ने गीत गाया में ने-युक्त कर्ता के साथ गाया का संबंध पुल्लिंग एकवचन कर्म गीत से है, इसलिए यह प्रयोग ठीक है। उसे मृत्युदंड मिला में मिला का संबंध पुल्लिंग मृत्युदंड से है। राम, सीता और लक्ष्मण गए में अनेक कर्ताओं के लिए बहुवचन क्रिया गए का प्रयोग उचित है।

चरण 3: प्रश्न के निषेध को लागू करें विकल्प (B), (C) और (D) में बताई गई व्याकरणिक संगति मिलती है, इसलिए इन्हें अशुद्ध वाक्य के उत्तर के रूप में नहीं चुनेंगे। प्रश्न शुद्ध वाक्य नहीं पूछता, बल्कि कौन-सा शुद्ध नहीं है पूछता है। उस आधार पर शब्द-चयन की त्रुटि वाला विकल्प (A) चुना जाएगा।

चरण 4: निष्कर्ष अभ्यासी के स्थान पर अभ्यस्त अपेक्षित है। शुद्ध रूप है: मैं पैदल चलने का अभ्यस्त हूँ। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: वाक्य-शुद्धि में पहले शब्द का संदर्भगत अर्थ जाँचें, फिर कर्ता-कर्म के साथ क्रिया का लिंग और वचन मिलाएँ।

35. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य की पहचान कीजिए - [5 अंक]

(A) सत्यवान की पत्नी सावित्री पतिव्रता नारी थी।

(B) सावित्री, जो सत्यवान की पत्नी थी, पतिव्रता नारी थी।

(C) सावित्री, पतिव्रता नारी थी, जो सत्यवान की पत्नी थी।

(D) सत्यवान की पतिव्रता नारी सावित्री थी।

सही उत्तर: (A) सत्यवान की पत्नी सावित्री पतिव्रता नारी थी।

हल:

अवधारणा:

- शुद्ध वाक्य में कर्ता, विशेषण, संबंधसूचक पद और विधेय का स्पष्ट तथा व्याकरणसम्मत संबंध होना चाहिए।
- सरल और मिश्र, दोनों प्रकार के वाक्य शुद्ध हो सकते हैं। केवल आश्रित उपवाक्य आने से किसी वाक्य को अशुद्ध नहीं कहा जा सकता।

चरण 1: सरल वाक्य का संबंध समझें सत्यवान की पत्नी सावित्री पतिव्रता नारी थी में सत्यवान की पत्नी पद सावित्री का परिचय देता है। सावित्री कर्ता है और पतिव्रता नारी थी उसका विधेय है। पत्नी, नारी और थी का स्त्रीलिंग एकवचन सामंजस्य भी सही है। इसलिए विकल्प (A) एक स्पष्ट और शुद्ध सरल वाक्य है।

चरण 2: मिश्र वाक्य की भी जाँच करें सावित्री, जो सत्यवान की पत्नी थी, पतिव्रता नारी थी में जो सत्यवान की पत्नी थी एक विशेषण उपवाक्य है। यह सावित्री का परिचय देता है; इसे हटाने पर भी मुख्य वाक्य सावित्री पतिव्रता नारी थी पूर्ण रहता है। इसलिए विकल्प (B) भी व्याकरण की दृष्टि से स्वीकार्य है। उसे केवल लंबा होने के कारण अशुद्ध बताना उचित नहीं होगा।

चरण 3: अस्पष्ट विकल्पों को अलग करें विकल्प (C) में कर्ता और विधेय के बीच अनावश्यक अल्पविराम है तथा अंत में रखा संबंधसूचक उपवाक्य अनगढ़ लगता है। विकल्प (D) में सत्यवान की पतिव्रता नारी कहने से पत्नी का स्पष्ट संबंध नहीं बनता और अपेक्षित परिचय विकृत हो जाता है। इनकी अपेक्षा (A) सीधा और निर्विवाद रूप है, किन्तु (B) को भी पूर्णतः अशुद्ध नहीं कहा जा सकता।

चरण 4: उत्तर और प्रश्न की सीमा बताएँ दी गई उत्तर-कुंजी में विकल्प (A) चुना गया है और यह निश्चित रूप से सही वाक्य है। फिर भी प्रश्न ने केवल सरल वाक्य नहीं माँगा है। इसलिए उसके वास्तविक शब्दों के अनुसार (B) भी शुद्ध है; एकमात्र शुद्ध विकल्प की अपेक्षा प्रश्न को संदिग्ध बनाती है।

चरण 5: निष्कर्ष उत्तर-कुंजी का विकल्प (A) शुद्ध है। किंतु विकल्प (B) भी व्याकरणसम्मत मिश्र वाक्य है; अतः प्रश्न के शब्दों के अनुसार (A) और (B) दोनों स्वीकार्य हैं और अद्वितीय उत्तर स्पष्ट नहीं है।

त्वरित सुझाव: जो से आरंभ उपवाक्य हटाकर मुख्य वाक्य पढ़ें; यदि दोनों संबंध सही हों, तो मिश्र वाक्य को केवल जटिल होने से अशुद्ध न मानें।

---

36. 'आँखों में चर्बी होना' मुहावरे का सही अर्थ है - [5 अंक]

(A) दुश्मन होना

(B) सारी रात जागते रहना

(C) हीन होना

(D) घमंडी होना

सही उत्तर: (D) घमंडी होना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ उसके शब्दों के साधारण अर्थों का जोड़ नहीं होता; पूरा पद-समूह एक प्रचलित भाव व्यक्त करता है।
- आँखों में चर्बी होना का भाव घमंड के कारण दूसरों की उपेक्षा करना या उन्हें तुच्छ समझना है।

चरण 1: लाक्षणिक भाव पहचानें इस मुहावरे में आँख और चर्बी किसी वास्तविक शारीरिक अवस्था की सूचना नहीं देते। संकेत उस व्यक्ति की ओर है जो अहंकार में सामने वाले की कद्र नहीं करता। उसकी दृष्टि में दूसरों का महत्त्व घट जाता है। इसी व्यवहार को घमंडी होना कहकर व्यक्त किया जाता है।

चरण 2: हर विकल्प का अर्थ मिलाएँ दुश्मन होना किसी से शत्रुता का संबंध बताता है, जो इस मुहावरे का अनिवार्य अर्थ नहीं है। सारी रात जागते रहना नींद न लेने की अवस्था है और इसका अहंकार से संबंध नहीं है। हीन होना कमी या निम्न स्थिति का बोध कराता है; यहाँ अपने को बड़ा मानने की प्रवृत्ति का संकेत है। इसलिए पहले तीन विकल्प उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: सही अर्थ से पुष्टि करें विकल्प (D) घमंडी होना उसी अहंकार और उपेक्षा के भाव को व्यक्त करता है जो मुहावरे में निहित है। अर्थ को समझने के लिए धन या पद मिलने पर दूसरों को महत्त्व न देने जैसी स्थिति सोच सकते हैं। ऐसे व्यवहार के लिए इस मुहावरे का प्रयोग होगा, न कि केवल रात भर जागने या किसी का विरोधी होने पर।

चरण 4: निष्कर्ष आँखों में चर्बी होना का अर्थ घमंडी होना है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मुहावरों में आँख जैसे शारीरिक शब्द देखकर शाब्दिक अर्थ न चुनें; पूरे पद का प्रचलित व्यवहारगत भाव पहचानें।

37. **'निन्यानवे के फेर में पड़ना' का सही अर्थ है -**

A. धन कमाने में लगे रहना

B. मूर्खता के कार्य कर बैठना

C. झंझटों में फंसे रहना

D. किसी चक्कर में पड़ जाना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें : [5 अंक]

(A) केवल (A)

(B) केवल (B) और (C)

(C) केवल (D)

(D) केवल (C) और (D)

सही उत्तर: (A) केवल (A)

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ उसके शब्दों के सामान्य अर्थ से अलग, भाषा में प्रचलित लाक्षणिक अर्थ के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- 'निन्यानवे के फेर में पड़ना' धन जोड़ते रहने की ऐसी प्रवृत्ति को व्यक्त करता है जिसमें व्यक्ति अधिक धन पाने की चिंता और लोभ में लगा रहता है।

चरण 1: मुहावरे का प्रचलित भाव पहचानें निन्यानवे के फेर का संबंध धन के संग्रह और अधिक पाने की इच्छा से है। व्यक्ति के पास जो है उससे संतोष नहीं होता और वह उसे बढ़ाने में लगा रहता है। इसलिए यहाँ निर्णायक भाव धन कमाते और जोड़ते रहने का है, केवल किसी साधारण परेशानी में उलझ जाने का नहीं। कथन (A) में 'धन कमाने में लगे रहना' इसी आर्थिक लोभ और निरंतर संग्रह की प्रवृत्ति को व्यक्त करता है। अतः (A) उपयुक्त है।

चरण 2: शेष कथनों को अर्थ से मिलाएँ कथन (B) 'मूर्खता के कार्य कर बैठना' किसी अविवेकपूर्ण काम की ओर संकेत करता है; यह धन-संग्रह वाले विशिष्ट अर्थ को नहीं बताता। कथन (C) 'झंझटों में फंसे रहना' सामान्य उलझनों का वर्णन है। कथन (D) 'किसी चक्कर में पड़ जाना' भी केवल व्यापक और सामान्य अर्थ देता है। मुहावरे में 'फेर' शब्द देखकर किसी भी चक्कर या झंझट को उत्तर मानना उचित नहीं है; पूरे मुहावरे के रूढ़ अर्थ को देखना आवश्यक है। इसीलिए (B), (C) और (D) को सही कथनों में सम्मिलित नहीं किया जा सकता।

चरण 3: सही कथन वाला विकल्प चुनें दिए गए उत्तरों में पहला विकल्प केवल कथन (A) को स्वीकार करता है। दूसरा विकल्प (B) और (C) को, तीसरा केवल (D) को तथा चौथा (C) और (D) को सही मानता है। चूँकि सही अर्थ केवल कथन (A) में है, पहले विकल्प का चयन किया जाएगा। कथन के अक्षर और उत्तर-विकल्प के अक्षर अलग स्तरों के संकेत हैं; यहाँ दोनों संयोग से (A) ही हैं।

चरण 4: निष्कर्ष 'निन्यानवे के फेर में पड़ना' का सही अर्थ धन कमाने में लगे रहना है। केवल कथन (A) सही है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: 'निन्यानवे का फेर' देखते ही धन जोड़ने और अधिक पाने के लोभ को याद करें; केवल 'फेर' शब्द के आधार पर झंझट या चक्कर वाला अर्थ न चुनें।

38. सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए :

सूची -I लेखक	सूची -II पुस्तक
(A). प्रेमचंद	(I). अजातशत्रु
(B). नागार्जुन	(II). पद्मावत
(C). जायसी	(III). बलचनमा
(D). जयशंकर प्रसाद	(IV). गोदान

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए : [5 अंक]

(A) (A) - (IV), (B) - (III), (C) - (II), (D) - (I)

(B) (A) - (I), (B) - (III), (C) - (II), (D) - (IV)

(C) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (IV), (D) - (III)

(D) (A) - (III), (B) - (IV), (C) - (I), (D) - (II)

सही उत्तर: (A) (A) - (IV), (B) - (III), (C) - (II), (D) - (I)

हल:

अवधारणा:

- लेखक और पुस्तक के सुमेलन में प्रत्येक कृति को उसके वास्तविक रचनाकार से जोड़ना होता है। एक ही परिचित जोड़ी मिल जाने से पूरा विकल्प सही नहीं हो जाता।
- गोदान प्रेमचंद का उपन्यास, बलचनमा नागार्जुन का उपन्यास, पद्मावत जायसी का काव्य और अजातशत्रु जयशंकर प्रसाद का नाटक है।

चरण 1: पहली दो लेखक-कृति जोड़ियाँ बनाएँ सूची के (A) प्रेमचंद की प्रसिद्ध कृति 'गोदान' है। दूसरी सूची में गोदान के सामने (IV) लिखा है, इसलिए पहला संबंध (A)-(IV) होगा। प्रेमचंद को अजातशत्रु या बलचनमा का लेखक मानना गलत होगा। सूची के (B) नागार्जुन की कृति 'बलचनमा' है, जो दूसरी सूची में (III) पर है। इसलिए दूसरी जोड़ी (B)-(III) बनती है। इन दोनों संबंधों को अलग-अलग निश्चित करके आगे के मिलान की जाँच करनी चाहिए।

चरण 2: जायसी और प्रसाद की कृतियाँ पहचानें मलिक मुहम्मद जायसी 'पद्मावत' के रचनाकार हैं। सूची में उनका संकेत (C) है और पद्मावत का संकेत (II), अतः तीसरा संबंध (C)-(II) है। जयशंकर प्रसाद की ऐतिहासिक नाट्यकृति 'अजातशत्रु' है। प्रसाद के लिए (D) और इस पुस्तक के लिए (I) दिया गया है, इसलिए चौथा संबंध (D)-(I) होगा। इस तरह चारों लेखकों और चारों कृतियों का एक-एक बार प्रयोग हो जाता है; कोई कृति दूसरे लेखक को नहीं दी जाती।

चरण 3: सभी संबंधों को विकल्पों से मिलाएँ पूरा क्रम (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I) है। यही पहले विकल्प में दिया गया है। दूसरे विकल्प में प्रेमचंद और प्रसाद की कृतियों का संबंध गलत हो जाता है। तीसरे विकल्प में नागार्जुन को पद्मावत से तथा जायसी को गोदान से जोड़ना सही नहीं है। चौथे विकल्प में नागार्जुन को गोदान और जायसी को अजातशत्रु से जोड़ दिया जाता है। इसलिए किसी आंशिक समानता पर रुकने के बजाय चारों संबंधों की एक साथ पुष्टि करने पर केवल पहला विकल्प सही रहता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही सुमेलन प्रेमचंद-गोदान, नागार्जुन-बलचनमा, जायसी-पद्मावत और जयशंकर प्रसाद-अजातशत्रु है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले गोदान-प्रेमचंद और पद्मावत-जायसी जैसी निश्चित जोड़ियाँ मिलाएँ, फिर बचे हुए दोनों संबंधों को भी जाँचें; एक सही जोड़ी देखकर पूरा विकल्प न चुनें।

39. जन्मकाल के अनुसार रचनाकारों का सही अनुक्रम क्या है?

(A) जयशंकर प्रसाद

(B) बालकृष्ण भट्ट

(C) मैथिलीशरण गुप्त

(D) केदारनाथ अग्रवाल [5 अंक]

(A) (A), (B), (C), (D)

(B) (A), (C), (B), (D)

(C) (B), (C), (A), (D)

(D) (C), (B), (D), (A)

सही उत्तर: (C) (B), (C), (A), (D)

हल:

अवधारणा:

- जन्मकाल के अनुक्रम में रचनाकारों को उनके जन्मवर्ष के बढ़ते क्रम में रखा जाता है। साहित्यिक ख्याति या रचना के प्रकाशन का क्रम इस प्रश्न का आधार नहीं है।
- बालकृष्ण भट्ट का जन्म 1844, मैथिलीशरण गुप्त का 1886, जयशंकर प्रसाद का 1889 और केदारनाथ अग्रवाल का 1911 में हुआ था।

चरण 1: प्रत्येक नाम के साथ जन्मवर्ष रखें प्रश्न में (A) जयशंकर प्रसाद, (B) बालकृष्ण भट्ट, (C) मैथिलीशरण गुप्त और (D) केदारनाथ अग्रवाल दिए गए हैं। इनके जन्मवर्ष क्रमशः 1889, 1844, 1886 और 1911 हैं। नामों के सामने दिए गए अक्षर स्थिर संकेत हैं; उन्हें बदलने के बजाय इन्हीं संकेतों को वर्ष के अनुसार नए क्रम में रखना है। यहाँ 'जन्मकाल' पूछा गया है, इसलिए किसी लेखक की मृत्यु, उसकी पहली पुस्तक या उसके साहित्यिक आंदोलन का समय लेकर क्रम नहीं बनाया जाएगा।

चरण 2: वर्षों को पुराने से नए क्रम में रखें सबसे पहले 1844 आता है, इसलिए बालकृष्ण भट्ट (B) पहले होंगे। उसके बाद 1886 में जन्मे मैथिलीशरण गुप्त (C) आएँगे। जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 में हुआ था, जो गुप्त के जन्म के बाद है; इसलिए प्रसाद (A) तीसरे स्थान पर होंगे। केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1911 में हुआ था, अतः वे (D) सबसे अंत में आएँगे। इस तुलना से बढ़ता क्रम 1844, 1886, 1889, 1911 प्राप्त होता है।

चरण 3: जन्मक्रम को दिए गए विकल्प से मिलाएँ अक्षरों में सही अनुक्रम (B), (C), (A), (D) है। तीसरा विकल्प यही क्रम देता है। पहला विकल्प प्रसाद को भट्ट से पहले रखता है, जबकि भट्ट का जन्म बहुत पहले हुआ था। दूसरा विकल्प भी प्रसाद को सबसे पहले रखता है और इसलिए गलत है। चौथा विकल्प गुप्त को भट्ट से पहले तथा अग्रवाल को प्रसाद से पहले रख देता है; दोनों संबंध जन्मवर्षों के विपरीत हैं। अतः चारों व्यक्तियों की स्थिति जाँचने के बाद तीसरा विकल्प ही सही ठहरता है।

चरण 4: निष्कर्ष जन्मकाल के अनुसार सही क्रम बालकृष्ण भट्ट, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद और केदारनाथ अग्रवाल है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: भट्ट को सबसे पहले और अग्रवाल को सबसे अंत में रखें; बीच के दो रचनाकारों में गुप्त का 1886 और प्रसाद का 1889 जन्मवर्ष याद करके क्रम निश्चित करें।

40. सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए :

सूची -I मुहावरे	सूची -II अर्थ
(A). नाक कटना	(I). खुशामद करना
(B). नाक काटना	(II). बेइज्जत होना
(C). नाक रखना	(III). बेइज्जत करना
(D). नाक रगड़ना	(IV). इज्जत करना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए : [5 अंक]

(A) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (III), (D) - (IV)

(B) (A) - (I), (B) - (III), (C) - (II), (D) - (IV)

(C) (A) - (II), (B) - (III), (C) - (IV), (D) - (I)

(D) (A) - (III), (B) - (IV), (C) - (I), (D) - (II)

सही उत्तर: (C) (A) - (II), (B) - (III), (C) - (IV), (D) - (I)

हल:

अवधारणा:

- 'नाक' वाले इन मुहावरों में नाक प्रतिष्ठा या सम्मान का प्रतीक है। क्रिया बदलने पर प्रतिष्ठा घटने, घटाने, बचाने या विनय करने का भाव बदल जाता है।
- मुहावरे का अर्थ पूरे पदबंध से निश्चित करें। 'कटना' और 'काटना' में स्वयं अपमानित होने और दूसरे को अपमानित करने का स्पष्ट अंतर है।

चरण 1: कटना और काटना का अंतर समझें 'नाक कटना' का अर्थ अपनी प्रतिष्ठा खोना या बेइज्जत होना है। अत: सूची के (A) को अर्थ (II) से जोड़ा जाएगा। 'नाक काटना' का अर्थ किसी को बेइज्जत करना है, इसलिए (B) का संबंध (III) से है। पहले मुहावरे में अपमान होने का भाव है, जबकि दूसरे में अपमान करने का भाव है। केवल दोनों में 'नाक' और 'कट' शब्द होने के कारण इनके अर्थ एक समान मान लेना सही नहीं होगा।

चरण 2: रखना और रगड़ना के अर्थ पहचानें 'नाक रखना' सम्मान बचाने या प्रतिष्ठा बनाए रखने को व्यक्त करता है। सूची में इसका निकट अर्थ 'इज्जत करना' (IV) दिया गया है; इसलिए (C)-(IV) का सुमेलन होगा। 'नाक रगड़ना' अत्यधिक विनय या खुशामद करने का भाव देता है। दूसरी सूची में 'खुशामद करना' (I) है, जिससे (D)-(I) का संबंध बनता है। इस प्रकार दोनों मुहावरे सम्मान बनाए रखने और दीनतापूर्वक प्रसन्न करने के अलग-अलग भाव व्यक्त करते हैं।

चरण 3: चारों जोड़ियाँ एक साथ जाँचें प्राप्त क्रम (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I) है, जो तीसरे विकल्प से मेल खाता है। पहले विकल्प में नाक कटना को खुशामद और नाक काटना को स्वयं बेइज्जत होना मान लिया जाता है। दूसरा विकल्प भी पहले और तीसरे संबंध को उलट देता है तथा नाक रगड़ना को इज्जत करने से जोड़ता है। चौथे विकल्प में नाक काटना को इज्जत करना बताने सहित कई संबंध गलत हैं। इसलिए सही विकल्प वही है जो चारों क्रियाओं के अर्थभेद को सुरक्षित रखता है।

चरण 4: निष्कर्ष नाक कटना-बेइज्जत होना, नाक काटना-बेइज्जत करना, नाक रखना-इज्जत करना और नाक रगड़ना-खुशामद करना का सुमेलन होगा। अत: सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले 'कटना' को अपने अपमान और 'काटना' को दूसरे के अपमान से जोड़ें; फिर 'रखना' में सम्मान तथा 'रगड़ना' में खुशामद का भाव पहचानें।

41. गाँधी जी ने लोगों से क्या कहा?

[5 अंक]

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिये |

अहिंसा का मतलब कमजोरी नहीं है | भाग जाना अहिंसा नही है| यदि शत्रु के सामने निःशस्त्र खड़े रहने की तैयारी न हो, तो उसके ऊपर प्रहार की तैयारी में खड़े रहो| लेकिन भाग जाना, तो पूरी तरह त्याज्य और निन्द्य है| इसी बात को गाँधी जी ने सौ बार कहा है, " यदि आप शस्त्रों से स्वराज्य ले सकते हैं, तो आप उसे ले लीजिये | मै दूर खड़ा रहूँगा | लेकिन गुलाम मत रहिए और यदि शस्त्रों से न लड़ सके, तो मेरी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल हो जाइए | स्वतंत्रता की लड़ाई तो हमें चालू रखनी ही पड़ेगी | भयभीत होकर सच्चाई के मार्ग से विमुख हो जाना, अहिंसा नहीं कायरता है | इसी कायरता के कारण जातियां गुलाम होती हैं | गुलामी में सड़ते रहना, तो मनुष्यों को शोभा नही देता" गाँधी जी का यह कहना नहीं था कि कल देखते-देखते सारी सेनाएं मिट जाएँगी | भारत को भी सेना, शस्त्रास्त्र सबकी जरूरत पड़ेगी | गीता के अठारहवें अध्याय में कहा गया है कि मारने पर भी मारना उचित नहीं होता है | लेकिन यह स्थिति किसकी है? जिसे सारा विश्व अपने जैसा दिखाई देता है, उसके मारने में जीवन ही है | माँ बच्चे को मारती है, पर बच्चा माँ के गोद में छिपकर रोता है, इसीलिए माँ का मारना, मारना नहीं होता | राम ने रावण को मारा, लेकिन हम कहते हैं कि उससे रावण का उद्धार हो गया, तो फिर राम का मारना भी हिंसा नहीं कहा जा सकता |

(A) स्वतंत्रता हेतु आप मेरी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल हो जाइये

(B) आप जो कर रहे हैं वह निन्दा है

(C) केवल शस्त्र से ही स्वतंत्रता की लड़ाई जीती जा सकती है

(D) गुलाम होकर भी जीवन जी सकते हैं

सही उत्तर: (A) स्वतंत्रता हेतु आप मेरी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल हो जाइये

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न का उत्तर वक्ता के कथन से लेना चाहिए। यहाँ गाँधी जी का आह्वान स्वतंत्रता की लड़ाई जारी रखने से जुड़ा है।
- निःशस्त्र संघर्ष और कायरतापूर्ण पलायन में अंतर है। गद्यांश में अहिंसा को गुलामी स्वीकार करने का नाम नहीं माना गया है।

चरण 1: गाँधी जी का कथन पहचानें गद्यांश में गाँधी जी कहते हैं कि यदि लोग शस्त्रों से स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं तो उसे प्राप्त करें, लेकिन गुलाम न रहें। इसके बाद वे स्पष्ट करते हैं कि यदि शस्त्रों से नहीं लड़ सकते तो उनकी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल हो जाएँ। इसलिए उनका आग्रह स्वतंत्रता के संघर्ष में भाग लेने का है। प्रश्न सामान्य विचार नहीं, लोगों से कही गई बात पूछता है; अतः इसी प्रत्यक्ष कथन को आधार बनाना होगा।

चरण 2: विकल्पों को कथन से मिलाएँ विकल्प (A) स्वतंत्रता हेतु निःशस्त्र लड़ाई में शामिल होने का वही आह्वान व्यक्त करता है। विकल्प (B) में दिया गया निन्दा वाला कथन उनका आह्वान नहीं है। विकल्प (C) का केवल शस्त्रों से विजय का आग्रह गलत है, क्योंकि गद्यांश स्वयं निःशस्त्र संघर्ष का विकल्प देता है। विकल्प (D) गुलामी में जीवन बिताने की स्वीकृति देता है, जबकि गाँधी जी साफ कहते हैं कि गुलाम मत रहिए। इस प्रकार बाकी तीनों विकल्प कथन की दिशा बदल देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष गाँधी जी ने लोगों से स्वतंत्रता हेतु अपनी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल होने को कहा। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: वक्ता ने क्या कहा, ऐसे प्रश्न में उद्धृत कथन का वही अंश चुनें जो विकल्प में सीधे दोहराया गया हो।

42. 'अहिंसा ' का अर्थ होता है -

[5 अंक]

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिये |

अहिंसा का मतलब कमजोरी नहीं है | भाग जाना अहिंसा नही है| यदि शत्रु के सामने निःशस्त्र खड़े रहने की तैयारी न हो, तो उसके ऊपर प्रहार की तैयारी में खड़े रहो| लेकिन भाग जाना, तो पूरी तरह त्याज्य और निन्द्य है| इसी बात को गाँधी जी ने सौ बार कहा है, " यदि आप शस्त्रों से स्वराज्य ले सकते हैं, तो आप उसे ले लीजिये | मै दूर खड़ा रहूँगा | लेकिन गुलाम मत रहिए और यदि शस्त्रों से न लड़ सके, तो मेरी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल हो जाइए | स्वतंत्रता की लड़ाई तो हमें चालू रखनी ही पड़ेगी | भयभीत होकर सच्चाई के मार्ग से विमुख हो जाना, अहिंसा नहीं कायरता है | इसी कायरता के कारण जातियां गुलाम होती हैं | गुलामी में सड़ते रहना, तो मनुष्यों को शोभा नही देता" गाँधी जी का यह कहना नहीं था कि कल देखते-देखते सारी सेनाएं मिट जाएँगी | भारत को भी सेना, शस्त्रास्त्र सबकी जरूरत पड़ेगी | गीता के अठारहवें अध्याय में कहा गया है कि मारने पर भी मारना उचित नहीं होता है | लेकिन यह स्थिति किसकी है? जिसे सारा विश्व अपने जैसा दिखाई देता है, उसके मारने में जीवन ही है | माँ बच्चे को मारती है, पर बच्चा माँ के गोद में छिपकर रोता है, इसीलिए माँ का मारना, मारना नहीं होता | राम ने रावण को मारा, लेकिन हम कहते हैं कि उससे रावण का उद्धार हो गया, तो फिर राम का मारना भी हिंसा नहीं कहा जा सकता |

(A) बिना प्रतिकार के कष्ट सहना

(B) युद्ध से हर हाल में दूर रहना

(C) भयभीत होना

(D) निःशस्त्र लड़ाई

सही उत्तर: (D) निःशस्त्र लड़ाई

हल:

अवधारणा:

- किसी गद्यांश में शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से तय होता है। यहाँ अहिंसा का संबंध स्वतंत्रता के लिए चलाए जा रहे निःशस्त्र संघर्ष से है।
- लेखक अहिंसा को कमजोरी, भय और भागने से अलग करता है। इसलिए शब्दार्थ चुनते समय संघर्ष की भावना को बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 1: अहिंसा का संदर्भ पढ़ें आरंभ में कहा गया है कि अहिंसा का मतलब कमजोरी नहीं है और भाग जाना अहिंसा नहीं है। आगे गाँधी जी का संदेश है कि शस्त्रों से न लड़ सकें तो उनकी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल हो जाएँ। इससे स्पष्ट होता है कि इस प्रसंग में अहिंसा निष्क्रियता या संघर्ष का त्याग नहीं, बल्कि बिना शस्त्रों के साहसपूर्वक संघर्ष करने का मार्ग है। स्वतंत्रता की लड़ाई जारी रखना इस अर्थ का आवश्यक अंग है।

चरण 2: निकट दिखने वाले अर्थों का अंतर समझें विकल्प (D) निःशस्त्र लड़ाई इस प्रसंग का सबसे सटीक अर्थ है। विकल्प (A) बिना प्रतिकार के कष्ट सहने तक अर्थ सीमित करता है; गद्यांश सत्य के मार्ग पर डटे रहने और लड़ाई जारी रखने की बात कहता है। विकल्प (B) हर हाल में युद्ध से दूर रहने को कहता है, जबकि पाठ हर परिस्थिति में शस्त्रों और सेना की आवश्यकता को नकारता नहीं है। विकल्प (C) भयभीत होना तो पाठ के विपरीत है: भय से सत्य के मार्ग से विमुख होना कायरता कहा गया है। इसलिए संदर्भ के सभी संकेत केवल निःशस्त्र लड़ाई से मेल खाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस गद्यांश के संदर्भ में अहिंसा का अर्थ निःशस्त्र लड़ाई है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रसंगानुकूल अर्थ में शब्दकोश का सामान्य अर्थ लगाने से पहले उसके आसपास के वाक्यों से लेखक की विशेष मंशा पहचानें।

43. गद्यांश के अनुसार कायरता के कारण उत्पन्न होती है - [5 अंक]

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिये |

अहिंसा का मतलब कमजोरी नहीं है | भाग जाना अहिंसा नही है| यदि शत्रु के सामने निःशस्त्र खड़े रहने की तैयारी न हो, तो उसके ऊपर प्रहार की तैयारी में खड़े रहो| लेकिन भाग जाना, तो पूरी तरह त्याज्य और निन्द्य है| इसी बात को गाँधी जी ने सौ बार कहा है, " यदि आप शस्त्रों से स्वराज्य ले सकते हैं, तो आप उसे ले लीजिये | मै दूर खड़ा रहूँगा | लेकिन गुलाम मत रहिए और यदि शस्त्रों से न लड़ सके, तो मेरी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल हो जाइए | स्वतंत्रता की लड़ाई तो हमें चालू रखनी ही पड़ेगी | भयभीत होकर सच्चाई के मार्ग से विमुख हो जाना, अहिंसा नहीं कायरता है | इसी कायरता के कारण जातियां गुलाम होती हैं | गुलामी में सड़ते रहना, तो मनुष्यों को शोभा नही देता" गाँधी जी का यह कहना नहीं था कि कल देखते-देखते सारी सेनाएं मिट जाएँगी | भारत को भी सेना, शस्त्रास्त्र सबकी जरूरत पड़ेगी | गीता के अठारहवें अध्याय में कहा गया है कि मारने पर भी मारना उचित नहीं होता है | लेकिन यह स्थिति किसकी है? जिसे सारा विश्व अपने जैसा दिखाई देता है, उसके मारने में जीवन ही है | माँ बच्चे को मारती है, पर बच्चा माँ के गोद में छिपकर रोता है, इसीलिए माँ का मारना, मारना नहीं होता | राम ने रावण को मारा, लेकिन हम कहते हैं कि उससे रावण का उद्धार हो गया, तो फिर राम का मारना भी हिंसा नहीं कहा जा सकता |

(A) गुलामी

(B) अहिंसा

(C) भय की प्रतीति

(D) पलायन की प्रवृत्ति

सही उत्तर: (A) गुलामी

हल:

अवधारणा:

- कारण पूछने वाले गद्यांश प्रश्न में उस वाक्य को ढूँढ़ना चाहिए जो दोनों घटनाओं का संबंध स्पष्ट करता हो। यहाँ कायरता कारण है और गुलामी उसका परिणाम है।
- अहिंसा और कायरता को लेखक ने अलग माना है। भय के कारण सच्चाई के मार्ग से हटना कायरता है, न कि साहसपूर्ण अहिंसा।

चरण 1: कारण बताने वाला वाक्य खोजें गद्यांश में पहले कहा गया है कि भयभीत होकर सच्चाई के मार्ग से विमुख हो जाना अहिंसा नहीं, कायरता है। उसके तुरंत बाद वाक्य आता है: इसी कायरता के कारण जातियाँ गुलाम होती हैं। प्रश्न भी इसी संबंध के बारे में पूछ रहा है। इसलिए उत्पन्न होने वाली अवस्था गुलामी है। यहाँ कारण के बाद आने वाले परिणाम को चुनना है, कारण की परिभाषा या उससे जुड़ी कोई दूसरी मानसिक स्थिति नहीं।

चरण 2: अन्य विकल्पों को अलग करें विकल्प (A) गुलामी पाठ में स्पष्ट रूप से कायरता का परिणाम कहा गया है। विकल्प (B) अहिंसा गलत है, क्योंकि लेखक कायरता को अहिंसा मानने से साफ मना करता है। विकल्प (C) भय की प्रतीति और विकल्प (D) पलायन की प्रवृत्ति कायरतापूर्ण व्यवहार से जुड़े लग सकते हैं, पर प्रश्न में माँगा गया प्रत्यक्ष परिणाम नहीं हैं। पाठ में भय और सत्य से विमुख होना कायरता की पहचान हैं; उसके सामाजिक परिणाम के रूप में गुलामी का उल्लेख किया गया है। अतः प्रत्यक्ष पाठ-साक्ष्य को सामान्य अनुमान पर प्राथमिकता मिलती है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश के अनुसार कायरता के कारण गुलामी उत्पन्न होती है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कारण के प्रश्न में इसी कारण, इसलिए और फलस्वरूप जैसे संकेतों के बाद आने वाले परिणाम को ध्यान से पढ़ें।

44. निम्नलिखित शब्दों का उचित वर्ण क्रम संयोजन है - अहिंसा , प्रहार , गुलाम , अध्याय [5 अंक]

(A) प्रहार, अध्याय, गुलाम, अहिंसा

(B) अध्याय, अहिंसा, गुलाम, प्रहार

(C) अहिंसा, अध्याय, प्रहार, गुलाम

(D) गुलाम, प्रहार, अहिंसा, अध्याय

सही उत्तर: (B) अध्याय, अहिंसा, गुलाम, प्रहार

हल:

अवधारणा:

- वर्णक्रम में शब्दों की तुलना पहले वर्ण से शुरू की जाती है। पहला वर्ण समान होने पर अगले वर्ण को देखा जाता है और पहला अंतर क्रम तय करता है।
- हिंदी वर्णमाला में स्वर व्यंजनों से पहले आते हैं। व्यंजनों में ध का स्थान ह से पहले और ग का स्थान प से पहले होता है।

चरण 1: समान प्रारंभ वाले शब्दों का क्रम तय करें अध्याय और अहिंसा दोनों अ से शुरू होते हैं। इसलिए केवल पहले अक्षर को देखकर इनका क्रम नहीं तय किया जा सकता। अगले व्यंजन की तुलना करने पर अध्याय में ध और अहिंसा में ह मिलता है। हिंदी वर्णमाला में ध पहले और ह बाद में आता है। अतः अध्याय पहले तथा अहिंसा उसके बाद रखा जाएगा। दोनों शब्द स्वर अ से शुरू होने के कारण ग और प से आरंभ होने वाले शब्दों से पहले आएँगे।

चरण 2: शेष शब्द जोड़कर विकल्प जाँचें गुलाम का आरंभ ग से और प्रहार का आरंभ प से होता है। वर्णमाला में ग का स्थान प से पहले है, इसलिए गुलाम के बाद प्रहार आएगा। पूरा क्रम अध्याय, अहिंसा, गुलाम, प्रहार बनता है, जो विकल्प (B) में है। विकल्प (A) प्रहार को सबसे पहले रखता है; विकल्प (C) अहिंसा को अध्याय से पहले रखता है और प्रहार को गुलाम से पहले कर देता है; विकल्प (D) ग और प से शुरू होने वाले शब्दों को अ से शुरू होने वाले शब्दों से पहले रखता है। ये तीनों क्रम वर्णमाला के नियम के विरुद्ध हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही वर्णक्रम अध्याय, अहिंसा, गुलाम, प्रहार है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: दो शब्द एक ही स्वर से शुरू हों तो उनके अगले अलग वर्ण की तुलना करें; शब्द का अर्थ वर्णक्रम नहीं बदलता।

45. पूरी तरह निंदनीय क्या है ? [5 अंक]

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिये |

अहिंसा का मतलब कमजोरी नहीं है | भाग जाना अहिंसा नही है| यदि शत्रु के सामने निःशस्त्र खड़े रहने की तैयारी न हो, तो उसके ऊपर प्रहार की तैयारी में खड़े रहो| लेकिन भाग जाना, तो पूरी तरह त्याज्य और निन्द्य है| इसी बात को गाँधी जी ने सौ बार कहा है, " यदि आप शस्त्रों से स्वराज्य ले सकते हैं, तो आप उसे ले लीजिये | मै दूर खड़ा रहूँगा | लेकिन गुलाम मत रहिए और यदि शस्त्रों से न लड़ सके, तो मेरी निःशस्त्र लड़ाई में शामिल हो जाइए | स्वतंत्रता की लड़ाई तो हमें चालू रखनी ही पड़ेगी | भयभीत होकर सच्चाई के मार्ग से विमुख हो जाना, अहिंसा नहीं कायरता है | इसी कायरता के कारण जातियां गुलाम होती हैं | गुलामी में सड़ते रहना, तो मनुष्यों को शोभा नही देता" गाँधी जी का यह कहना नहीं था कि कल देखते-देखते सारी सेनाएं मिट जाएँगी | भारत को भी सेना, शस्त्रास्त्र सबकी जरूरत पड़ेगी | गीता के अठारहवें अध्याय में कहा गया है कि मारने पर भी मारना उचित नहीं होता है | लेकिन यह स्थिति किसकी है? जिसे सारा विश्व अपने जैसा दिखाई देता है, उसके मारने में जीवन ही है | माँ बच्चे को मारती है, पर बच्चा माँ के गोद में छिपकर रोता है, इसीलिए माँ का मारना, मारना नहीं होता | राम ने रावण को मारा, लेकिन हम कहते हैं कि उससे रावण का उद्धार हो गया, तो फिर राम का मारना भी हिंसा नहीं कहा जा सकता |

(A) परिस्थितियों से भाग जाना

(B) परिस्थितियों से लड़कर हार जाना

(C) परिस्थितियों का मुकाबला करना

(D) परिस्थितियों को समझने की कोशिश करना

सही उत्तर: (A) परिस्थितियों से भाग जाना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में लेखक का प्रत्यक्ष कथन निर्णय का आधार होता है। अहिंसा का अर्थ कायरता या संघर्ष से पलायन नहीं है।
- निंदनीय उस आचरण को कहा जाता है जिसकी लेखक स्पष्ट रूप से आलोचना करता है। यहाँ संघर्ष का परिणाम और संघर्ष से भागने का निर्णय अलग बातें हैं।

चरण 1: निर्णायक कथन पहचानिए गद्यांश में स्पष्ट है कि भाग जाना पूरी तरह त्याज्य और निंद्य है। लेखक यह भी कहता है कि भयभीत होकर सच्चाई के मार्ग से विमुख होना अहिंसा नहीं, कायरता है। इसलिए परिस्थितियों से बचकर भागना ही प्रश्न में पूछा गया निंदनीय आचरण है।

चरण 2: सभी विकल्पों का परीक्षण कीजिए विकल्प (A) परिस्थितियों से भाग जाने की बात कहता है और लेखक की आलोचना से सीधे मेल खाता है। विकल्प (B) में व्यक्ति लड़ता है, भले ही हार जाए; ऐसी हार को गद्यांश पूरी तरह निंदनीय नहीं कहता। विकल्प (C) मुकाबला करना साहस का परिचायक है। विकल्प (D) परिस्थितियों को समझने का प्रयास है, पलायन नहीं। इसलिए इन तीनों को भाग जाने के बराबर नहीं माना जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष पूरी तरह निंदनीय आचरण परिस्थितियों से भाग जाना है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रश्न में निंद्य, त्याज्य या कायरता जैसे मूल्यांकन बताने वाले शब्द खोजिए और उनके साथ जुड़े आचरण को विकल्प से मिलाइए।

---

46. कवि ने वीरों का वंशज किसे कहा है ? [5 अंक]

निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

विषुवत- रेखा का वासी जो, जीता है नित हाँफ- हाँफ कर,
रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर।
ध्रुव वासी जो हिम में तम में, जी लेता है काँप- काँप कर,
वह भी अपनी मातृभूमि पर, कर देता है प्राण निछावर।
तुम तो हे प्रिय बन्धु! स्वर्ग सी, सुखद सकल विभवों की आकर,
धरा-शिरोमणि मातृभूमि में, धन्य हुए हो जीवन पाकर।
तुम जिसका जल-अन्न ग्रहण कर, बड़े हुए लेकर जिसका रज,
तन रहते कैसे तज दोगे, उसको हे वीरों के वंशज॥
जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन,
रखो आत्म-गौरव से ऊँची, पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन॥

(A) विषुवत प्रदेश के लोगों को
(B) ध्रुव प्रदेश के लोगों को
(C) भारतीयों को
(D) सुखद जीवन जीने वाले लोगों को

सही उत्तर: (C) भारतीयों को

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में संबोधन किसके लिए है, यह उसके पहले और बाद की पंक्तियों के प्रसंग से तय किया जाता है। केवल निकटतम संज्ञा देखकर उत्तर नहीं चुनना चाहिए।
- कवि पहले विषुवत और ध्रुव प्रदेशों के निवासियों का उदाहरण देता है, फिर अपनी मातृभूमि के निवासियों को उसके प्रति कर्तव्य और आत्मगौरव का स्मरण कराता है।

चरण 1: कवि के संबोधन का संदर्भ समझिए कवि विषुवत प्रदेश और ध्रुव प्रदेश के लोगों के मातृभूमि-प्रेम का उदाहरण देने के बाद अपने बंधु को संबोधित करता है। वह कहता है कि तुमने मातृभूमि का जल-अन्न ग्रहण किया है और उसकी रज में बड़े हुए हो। इसी संबोधन में वह वीरों के वंशज कहकर अपनी भूमि को न त्यागने की प्रेरणा देता है। यह भारतीयों के प्रति देशप्रेम का आह्वान है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर कीजिए विकल्प (A) और (B) के निवासी आरंभ में उदाहरण के रूप में आए हैं; वीरों के वंशज वाला संबोधन सीधे उन्हीं के लिए नहीं है। विकल्प (D) सुखद जीवन जीने वाले लोगों का सामान्य वर्ग है और कवि के देशभक्ति संबंधी संबोधन को स्पष्ट नहीं करता। विकल्प (C) भारतीयों को पहचानता है, जिन्हें अपनी मातृभूमि और आत्मगौरव की रक्षा का संदेश दिया जा रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने भारतीयों को वीरों का वंशज कहा है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कविता में तुम या बंधु जैसे संबोधन मिलने पर उदाहरण में आए लोगों और सीधे संबोधित समुदाय के बीच अंतर करके उत्तर चुनिए।

---

47. 'रज' शब्द का अर्थ होता है - [5 अंक]

निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

विषुवत- रेखा का वासी जो, जीता है नित हाँफ- हाँफ कर,
रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर।
ध्रुव वासी जो हिम में तम में, जी लेता है काँप- काँप कर,
वह भी अपनी मातृभूमि पर, कर देता है प्राण निछावर।
तुम तो हे प्रिय बन्धु! स्वर्ग सी, सुखद सकल विभवों की आकर,
धरा-शिरोमणि मातृभूमि में, धन्य हुए हो जीवन पाकर।
तुम जिसका जल-अन्न ग्रहण कर, बड़े हुए लेकर जिसका रज,
तन रहते कैसे तज दोगे, उसको हे वीरों के वंशज॥
जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन,
रखो आत्म-गौरव से ऊँची, पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन॥

(A) रस्सी
(B) अन्न
(C) मिट्टी
(D) पुष्प

सही उत्तर: (C) मिट्टी

हल:

अवधारणा:

- किसी शब्द का सही अर्थ उसके वाक्य में प्रयोग से निश्चित होता है। रज का अर्थ धूल या मिट्टी है; इसे मिलते-जुलते अन्य शब्दों से नहीं मिलाना चाहिए।
- काव्यांश में मातृभूमि के जल-अन्न और उसकी रज में बड़े होने की बात है। यह जन्मभूमि से शरीर और जीवन के संबंध को व्यक्त करता है।

चरण 1: रज का संदर्भगत अर्थ पहचानिए कवि कहता है कि मनुष्य ने मातृभूमि का जल-अन्न ग्रहण किया और उसकी रज लेकर बड़ा हुआ। यहाँ रज उस भूमि की धूल या मिट्टी है जिसके संपर्क में व्यक्ति का पालन-पोषण हुआ। जल, अन्न और मिट्टी के उल्लेख से मातृभूमि के प्रति आत्मीयता और ऋण का भाव उभरता है।

चरण 2: विकल्पों को अर्थ से मिलाइए विकल्प (C) मिट्टी रज का उपयुक्त अर्थ देता है। विकल्प (A) रस्सी का अर्थ किसी वस्तु को बाँधने की डोरी है, जो यहाँ लागू नहीं होता। विकल्प (B) अन्न भोजन के लिए प्रयुक्त होता है और वह काव्यांश में अलग शब्द के रूप में पहले ही आया है। विकल्प (D) पुष्प फूल को कहते हैं; वह भी रज का अर्थ नहीं है। अतः केवल मिट्टी शब्द काव्यांश की पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष रज शब्द का अर्थ मिट्टी है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: शब्दार्थ चुनने के बाद उसे मूल पंक्ति में रखकर पढ़िए; मातृभूमि की मिट्टी में बड़े होने का अर्थ यहाँ सहज और संगत है।

---

48. निम्नलिखित शब्दों को उचित वर्ण क्रम में संयोजन कीजिए - अनुराग, अलौकिक, अन्न, आत्मगौरव [5 अंक]

निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

विषुवत- रेखा का वासी जो, जीता है नित हाँफ- हाँफ कर,

रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर।

ध्रुव वासी जो हिम में तम में, जी लेता है काँप- काँप कर,

वह भी अपनी मातृभूमि पर, कर देता है प्राण निछावर।

तुम तो हे प्रिय बन्धु! स्वर्ग सी, सुखद सकल विभवों की आकर,

धरा-शिरोमणि मातृभूमि में, धन्य हुए हो जीवन पाकर।

तुम जिसका जल-अन्न ग्रहण कर, बड़े हुए लेकर जिसका रज,

तन रहते कैसे तज दोगे, उसको हे वीरों के वंशज॥

जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन,

रखो आत्म-गौरव से ऊँची, पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन॥

(A) अन्न, अनुराग, अलौकिक, आत्मगौरव

(B) अनुराग, अन्न, अलौकिक, आत्मगौरव

(C) आत्मगौरव, अनुराग, अलौकिक, अन्न

(D) अलौकिक, अनुराग, अन्न, आत्मगौरव

सही उत्तर: (B) अनुराग, अन्न, अलौकिक, आत्मगौरव

हल:

अवधारणा:

- वर्णक्रम में शब्दों की तुलना पहले अक्षर से आरंभ करके पहले भिन्न वर्ण तक की जाती है। समान आरंभ होने पर आगे का अक्षर या मात्रा क्रम निर्धारित करती है।
- अ से शुरू होने वाले शब्द आ से शुरू होने वाले शब्द से पहले आते हैं। समान आरंभ के बाद स्वर व्यंजन से पहले आता है; संयुक्त व्यंजन की तुलना करते समय हलंत सहित वर्ण-विच्छेद आवश्यक है।

चरण 1: अ और आ से आरंभ होने वाले शब्द अलग कीजिए अनुराग, अलौकिक और अन्न का आरंभ अ से होता है, जबकि आत्मगौरव आ से आरंभ होता है। स्वरक्रम में अ पहले और आ बाद में है। इसलिए आत्मगौरव इन चारों में अंत में आएगा। इससे वे क्रम हट जाते हैं जिनमें आत्मगौरव आरंभ में रखा गया है।

चरण 2: समान आरंभ वाले शब्दों की तुलना कीजिए अनुराग का आरंभिक वर्ण-विच्छेद अ + न् + उ है, जबकि अन्न का अ + न् + न् है। पहले दो वर्ण समान हैं, पर उसके बाद अनुराग में स्वर उ और अन्न में व्यंजन न् आता है। स्वरक्रम व्यंजनक्रम से पहले आता है, इसलिए अनुराग पहले और अन्न बाद में आएगा। दोनों में अ के बाद न् है, जबकि अलौकिक में ल् है; व्यंजनक्रम में न्, ल् से पहले है। आत्मगौरव आ से आरंभ होने के कारण अंत में है। इस प्रकार अनुराग, अन्न, अलौकिक, आत्मगौरव क्रम सही है। विकल्प (A) में पहले दो शब्द उलटे हैं; (C) में आ वाला शब्द सबसे पहले है और (D) में ल् वाला शब्द न् वाले शब्दों से पहले है।

चरण 3: निष्कर्ष वर्ण-विच्छेद और स्वर-व्यंजन क्रम के अनुसार अनुराग, अन्न, अलौकिक, आत्मगौरव सही क्रम है। अतः सही विकल्प (B) है। दी गई उत्तर-कुंजी में पहला विकल्प है, पर अन्न के पहले न् में स्वर अ नहीं है; उसके बाद न् आता है, जबकि अनुराग में उ आता है। इसलिए कुंजी का क्रम वर्णक्रम के नियम से संगत नहीं है।

त्वरित सुझाव: संयुक्त व्यंजन वाले शब्द की तुलना करते समय अक्षर का दृश्य रूप नहीं, उसका वर्ण-विच्छेद देखिए; हलंत न् को न + अ मानने से क्रम गलत हो जाएगा।

49. कवि ने देशवासियों को जगाने के लिए इनमें से किसका उदाहरण नहीं दिया है? [5 अंक]

निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

विषुवत- रेखा का वासी जो, जीता है नित हाँफ- हाँफ कर,

रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर।

ध्रुव वासी जो हिम में तम में, जी लेता है काँप- काँप कर,

वह भी अपनी मातृभूमि पर, कर देता है प्राण निछावर।

तुम तो हे प्रिय बन्धु! स्वर्ग सी, सुखद सकल विभवों की आकर,

धरा-शिरोमणि मातृभूमि में, धन्य हुए हो जीवन पाकर।

तुम जिसका जल-अन्न ग्रहण कर, बड़े हुए लेकर जिसका रज,

तन रहते कैसे तज दोगे, उसको हे वीरों के वंशज॥

जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन,

रखो आत्म-गौरव से ऊँची, पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन॥

(A) विषुवत प्रदेश के वासियों का

(B) ध्रुव प्रदेश के वासियों का

(C) अपने मातृभूमि के प्रति समर्पित लोगों का

(D) जंगल के वासियों का

सही उत्तर: (D) जंगल के वासियों का

हल:

अवधारणा:

- निषेधात्मक प्रश्न में उस विकल्प को चुनते हैं जिसका उल्लेख पद्यांश में नहीं है। यहाँ पूछा गया है कि कवि ने किसका उदाहरण नहीं दिया है।
- कवि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वालों की मातृभूमि के प्रति निष्ठा दिखाकर देशवासियों में देशप्रेम और आत्मगौरव जगाता है।

चरण 1: पद्यांश में दिए गए उदाहरण पहचानें आरंभ में विषुवत रेखा के वासी का वर्णन है, जो हाँफते हुए भी अपनी मातृभूमि से अनुराग रखता है। इसके बाद ध्रुववासी का उदाहरण है, जो हिम और अंधकार में काँपकर जीवन बिताता है, फिर भी अपनी मातृभूमि पर प्राण न्योछावर करता है। इस प्रकार विषुवत प्रदेश तथा ध्रुव प्रदेश के वासी दोनों स्पष्ट रूप से उल्लिखित हैं।

चरण 2: विकल्पों को पाठ से मिलाएँ विकल्प (A) विषुवत प्रदेश के वासियों का है, इसलिए वह दिया गया उदाहरण है। विकल्प (B) ध्रुव प्रदेश के वासियों का है, जिसका उल्लेख भी पद्यांश में है। विकल्प (C) मातृभूमि के प्रति समर्पित लोगों का है; दोनों उदाहरणों में यही समर्पण दिखाई देता है। इसलिए इन तीनों को प्रश्न के नकारात्मक उत्तर के रूप में नहीं चुन सकते।

चरण 3: अनुपस्थित उदाहरण चुनें पद्यांश में जंगल में रहने वाले लोगों का उदाहरण नहीं दिया गया है। वनवासियों या जंगल के जीवन का कोई वर्णन इस अंश में नहीं आता। कवि की प्रेरणा विषुवत और ध्रुव प्रदेश के निवासियों के देशप्रेम से जुड़ी है, जंगल के निवासियों से नहीं। इसलिए चौथा विकल्प ही प्रश्न में पूछी गई अनुपस्थिति को व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने जंगल के वासियों का उदाहरण नहीं दिया है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रश्न में पहले "नहीं" को पहचानें; फिर प्रत्येक विकल्प का प्रमाण पद्यांश में खोजकर केवल अनुपस्थित उल्लेख चुनें।

50. निम्नलिखित काव्य पंक्ति में कौन सा अलंकार है ?

"तुम तो हे प्रिय बन्धु ! स्वर्ग सी " [5 अंक]

निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर अगले पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

विषुवत- रेखा का वासी जो, जीता है नित हाँफ- हाँफ कर,

रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर।

ध्रुव वासी जो हिम में तम में, जी लेता है काँप- काँप कर,

वह भी अपनी मातृभूमि पर, कर देता है प्राण निछावर।

तुम तो हे प्रिय बन्धु! स्वर्ग सी, सुखद सकल विभवों की आकर,

धरा-शिरोमणि मातृभूमि में, धन्य हुए हो जीवन पाकर।

तुम जिसका जल-अन्न ग्रहण कर, बड़े हुए लेकर जिसका रज ,

तन रहते कैसे तज दोगे, उसको हे वीरों के वंशज ॥

जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन,

रखो आत्म-गौरव से ऊँची, पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन ॥

(A) उपमा अलंकार

(B) रूपक अलंकार

(C) अनुप्रास अलंकार

(D) श्लेष अलंकार

सही उत्तर: (A) उपमा अलंकार

हल:

अवधारणा:

- उपमा अलंकार में किसी वस्तु या व्यक्ति की तुलना किसी अन्य वस्तु से समान गुण के आधार पर की जाती है। सा, सी, जैसे और समान जैसे शब्द तुलना के सूचक होते हैं।
- उपमेय जिसकी तुलना की जाती है और उपमान जिससे तुलना होती है। रूपक में सीधे अभेद स्थापित होता है, जबकि उपमा में समानता बताई जाती है।

चरण 1: तुलना सूचक शब्द पहचानें दी गई पंक्ति में "स्वर्ग सी" शब्द हैं। यहाँ "सी" समानता बताने वाला वाचक शब्द है। आगे के पद्यांश में मातृभूमि को सुखद तथा समस्त वैभवों की आकर कहा गया है। इसलिए मातृभूमि की सुखदता और संपन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है। स्वर्ग जैसा होना और सीधे स्वर्ग ही घोषित कर देना अलग बातें हैं।

चरण 2: अलंकार के अंग समझें इस तुलना में मातृभूमि उपमेय और स्वर्ग उपमान है। "सी" उपमावाचक शब्द है; सुख और वैभव समानता का आधार हैं। उद्धृत पंक्ति छोटी होने पर भी तुलना का यह संकेत स्पष्ट है। कवि मातृभूमि की महिमा समझाने के लिए स्वर्ग की परिचित सुखद कल्पना का सहारा लेता है। यह उपमा अलंकार की पहचान है।

चरण 3: अन्य विकल्पों से अंतर करें विकल्प (B) रूपक नहीं होगा, क्योंकि यहाँ उपमेय को उपमान ही नहीं कहा गया, बल्कि "सी" से तुलना की गई है। विकल्प (C) अनुप्रास में किसी वर्ण की आवृत्ति मुख्य विशेषता होती है; इस प्रश्न में निर्णायक विशेषता स्वर्ग से तुलना है। विकल्प (D) श्लेष के लिए एक शब्द से अनेक अर्थ प्रकट होने चाहिए, जो इस पंक्ति में नहीं है। इसलिए उपमा वाला विकल्प ही उपयुक्त है।

चरण 4: निष्कर्ष "स्वर्ग सी" में तुलना सूचक "सी" होने के कारण उपमा अलंकार है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: "सा", "सी" या "जैसा" देखकर पहले जाँचें कि दो वस्तुओं की तुलना हो रही है या नहीं; स्पष्ट तुलना उपमा की प्रमुख पहचान है।